आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 21 | उदयपुर शुक्रवार 15 नवम्बर 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

इतिहास का कणकोला लेखन

इतिहास वही नहीं होता जो किताबों में लिखा होता है। ऐसा इतिहास पूरा नहीं होता और बाजवक्त सत्य कथन वाला भी नहीं होता। हमारा अधिकांश घटना, प्रसंग स्मृतियों में जड़ाव लिये होता है जो लिखित नहीं, मौखिक, कण्ठासीन होता है। क्या वह धरोहर जो अधिकाधिक और व्यापक तथा लम्बा स्थायीत्व लिए तथ्य तथा साक्ष्य परक होती है, इतिहास नहीं होती?

सच तो यह है कि किसी भी समाज, कुनबा तथा राष्ट्र के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक तथा ऐतिहासिक समग्रता को जानने-समझने के लिए जन धारणा अथवा जनाधारित लोक स्मृतियों में पैठित घटना-सन्दर्भ-समझ को नजरअन्दाज कर हम किसी भी तथ्य-सत्य तक नहीं पहुंच सकते।

इसलिए अब तक इतिहास के नाम पर जो लेखन किया गया वह अधूरा, अपूर्ण तथा अप्टूडेट नहीं कहा जा सकता। ऐसा इतिहास लेखन उस कणकोले की तरह है जिसके माध्यम से कोई महिला अपनी एक आंख को सर्वथा छिपाती हुई घूंघट के पल्लू का छोटा-सा खिड़का बनाकर दूसरी आंख से बमुश्किल देख पाती है। इति अथवा बीती घटनाओं का कोरा लेखन समझू लेखन नहीं होकर इति का हास ही अधिक बनता है।

यह भी कि जिन समुदायों में लिखने की परम्परा अथवा लिखित शब्द ही नहीं है वहां सब कुछ जानकारी मौखिक रूप में चली आ रही परम्पराशीलता में ही है। जैन, बौद्ध और हिन्दू परम्परा में प्रचलित बहुत सारी मान्यताएं और उनके स्रोत परम्परा से ही लिए गए हैं। ये ही स्मृतियां एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अवतरित होती रहती हैं। इस प्रक्रिया में उनका पुनर्पाठ, पुनर्वास, पुनर्दशन अथवा पुनर्स्थापन होता रहता है।

व्यक्ति या समूह की स्मृति में दर्ज हुई हर घटना जीवन को तो प्रभावित करती है पर इतिहास नहीं होती किन्तु इतिहास छूटी बातें जिन समाजों में प्रचलित होती हैं वे उनके अतीत के पुनर्निमाण में अथवा उसे किसी न किसी प्रकार यादगार बनाये रखने में सहायक होती हैं। उनसे उस समाज के सामाजिक सरोकारों तथा जीवन परिपालन के दर्शन अथवा सिद्धान्तों की जानकारी भी मिलती है। वैयक्तिक स्मृतियों की तुलना में सामूहिक स्मृतियां अधिक प्रभावी, असरकारी तथा विश्वसनीय होती हैं। इसका कारण वे समूह द्वारा बार-बार सुनाई जाने वाली, दोहराई जाने वाली तथा स्वीकार की जाने वाली होती हैं जबकि व्यक्तिवादी स्मृतियों में व्यक्ति का अपना वर्चस्व, दिखावा, बढ़ा-चढ़ाकर अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति की और जोड़तोड़ गुंजाइश देखने को मिलती है।

मिथक इतिहास को एक अलग ढंग से बान्धे रखते हैं। रामायण के राम और महाभारत के कृष्ण भारतीय जनमानस में जिस ढंग से हजारों वर्षों की भावभूमि का मिथकीय इतिहास लिये हैं वह अद्भुत है। ऐसा इतिहास कभी मरता, खण्डित नहीं होता वरन अधिक सबल, सशक्त तथा सत्यनिष्ठ बनकर बलिष्ठ होता रहता है। उसका तथ्यपरक इतिहास खोजना इतिहास की एक खतरनाक घातक कोशिश ही समझी जाती है।

इतिहास का लेखन व्यक्ति के नजरिये का प्रतिफल भी होता है। कोई लेखक किस विचारधारा अथवा मान्यता का है, इसका असर भी प्रभाव देता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा को ही देखें तो फ्रांसीसी लेखक गार्साँद तासी से शुरू होती जार्ज ग्रियर्सन, मिश्रबन्धु, रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से लेकर आजादी के बाद के लेखकों तक मिलती है।

शुक्लजी का लिखा इतिहास विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने के कारण सर्वाधिक पढ़ाया जाता रहने से सर्वाधिक चर्चित हुआ। द्विवेदीजी ने उनकी कई मान्यताओं का खण्डन किया तो उनकी शिष्य मण्डली ने भी उसे आगे नहीं बढ़ाया जिससे उसकी मान्यता का उबाल शिथिल पड़ गया। भागजोग से बाद में रामविलास शर्मा ने जब अपना पूरजोर समर्थन दिया तो शुक्लजी का इतिहास पुनः सबकी आंखों का तारा बन कालजयी माना जाने लगा। ऐसा अन्य क्षेत्रों में भी हुआ।

मध्ययुग में मीरां के अलावा अन्य कोई हिन्दी कवयित्री साहित्य के इतिहास में अपनी किरण नहीं दे पाई जबकि आधुनिक युग में मीरां द्वारा रचित कहे जाने वाले साहित्य की प्रामाणिकता पर ही पुनः खोज की आवाजें अधिक बुलन्द होती पाई जा रही हैं।

दलितों, स्त्रियों तथा अल्पसंख्यकों की पक्षधरता नहीं रहने से उनका इतिहास किसी का समर्थन नहीं ले पाया। परिणाम यह भी हुआ कि मुख्यधारा तक के इतिहासकारों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण नायक ही खास जगह नहीं ले पाये। कई खास छूट गये और ना-खास खास बनकर भी पहचान बने। आज इतिहास लेखन के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं। औपनिवैशिक दौर में लिखे गये इतिहास के तथ्यों तथा नजरियों पर लगातार सन्देह किया जाकर उन्हें लगभग नकारा जा रहा है और फिर से प्रामाणिक इतिहास लेखन पर जोर दिया जा रहा है। जमीनी हकीकत से जुड़े समाजों को सदैव ही महत्व नहीं दिया जाकर उन्हें हाशिये पर भी ठीक से नहीं दिखाया गया। आदिवासियों के योगदान को तो सिरे से नकारा ही जाता रहा।

उल्लेखनीय यह भी है कि हिन्दी साहित्य की परम्परा को प्राचीन दिखाने की गरज से हिन्दी प्रदेशों के क्षेत्रों में बोली जाने वाली मैथिली, ब्रज, अवधी, डिंगल आदि भाषा-साहित्य को महत्वपूर्ण बताया गया किन्तु आधुनिक काल में प्रवेश करते ही इन्हें तख्त से उतार दिया गया। यही नहीं, उनकी तख्तियां बदल कर उन्हें भाषा से बोली बनाकर इतिहास से आउट भी कर दिया गया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इतिहास लेखन के इस रगड़न-झगड़न को तब ही भांप लिया था। इसीलिए उन्होंने कह दिया था कि वह देश भाग्यशाली है जिसका कोई इतिहास नहीं है।

दास्तान एक पूरवज कुत्ते की

यों कहने को हमारे एक मित्र ओंकारश्री ने एक कुत्ता पाला है मगर अप्रेल 1978 को जब जमकर उनसे चर्चा हुई तो एक नई शोध का बोध हुआ। कहने लगे कि कुत्ता पाला नहीं है पर एक पहेली बन गया है। किसी को कहें तो सुनने वाले ही यह अनर्थ दे बैठे कि क्या गजब का आदमी है जो अपने पूरवज को कुत्ता कह रहा है पर है यही हकीकत कि वह कुत्ता हमारा ही पूरवज है।

मैंने कहा कि मरने के बाद जिस जूण (योनि) में व्यक्ति जाता है उसका तुरन्त पता लगा लेती हैं घर की औरतें। चौरासी लाख जीवों का संसार कहा गया है जिसमें मनुष्य भटकता रहता है। यदि कोई कुत्ता बन जाय तो आश्चर्य ही क्या। मेरी इस बात पर उन्हें गर्मी में कुल्फी सी राहत मिली और वे अपने उस कुत्ते के लच्छन सुनाने लग गये।

कहने लगे कि जबसे कुत्ता आया है तब से सारे ही मांगलिक कार्य पूरे हुए जा रहे हैं। बड़ा विलक्षणी है। रात को सबके साथ बीच में बिस्तर पर सोता है। तकिया लगाता है। ओढ़ता है पर मुंह खुला रखता है। बहुत छोटा था तब कुत्तों के झंझेड़े में आ गया सो उधर गुजरते मेरा बच्चा उठा लाया।

उसी दिन किसी पूरवज की बरसी थी। हम भोजन पर बैठे ही थे कि ये भाई आ धमके सो इन्हें ही सबसे पहले खीर-पूड़ी का भोजन कराया गया। कुत्ते महाराज ने बकायदा दण्डवत कर भोजन कर लिया। ग्यारस तथा पूर्णिमा को यह भाई व्रत रखता है। रात को ठीक बारह बजे बाद व्रत खोलता है। इस दिन हम उसके पास में दूध में रोटी मिलाकर रख देते हैं।

उन्होंने बताया कि घर की यह पूरी चौकसी करता है। सबके साथ भोजन करता है। कहीं से कोई मेहमान आता है तो कहने पर उनके घर पहुंचा आता है। बीच में अन्य कुत्ते मिलते हैं तो यह उन्हें लांघता हुआ निडर बना चला जाता है और कुशलक्षेम पूर्वक लौट आता है। घर में स्वतः ही सब लोग इसे पूरवज का ही रूप मानकर वैसा ही व्यवहार करते हैं।

एकदिन तो एक सज्जन ने कुत्ते को देखते ही पता नहीं कैसे कह दिया कि यह कुत्ता इस घर का पूरवज है। इसकी अच्छी तरह देखभाल करना। कभी इसे लात मत मारना और न लकड़ी से इसे पीटना ही। इससे घर वालों की कुत्ते के प्रति चली आ रही मान्यता सबल हुई और दिन प्रतिदिन कुत्ते के प्रति उनका ममता भाव बढ़ता गया। कुत्ता अभी भी है।

एक-दो बार उसे भगाया भी मगर वह घूम-फिरकर वापस यहीं आ गया। कुछ न रखेंगे तो वह भूखा रह जायगा मगर इधर-उधर मुंह नहीं डालेगा। कुत्ता बड़ा साणा है। समझू है। पूरा घरबारी और व्यावहारिक है। केवल देह से कुत्ता है बाकी तो पूरा मानव स्वभावी है। उसके रहते कोई आओ, कोई जाओ मगर क्या मजाल कि कोई रत्ती राई भर चीज उठा कर ले जाये। कुत्ते का यह किस्सा जिस-जिसने भी सुना उसने यही कहा कि सर्प पूरवज से तो कुत्ता पूरवज अच्छा जिससे डर लगे न कोई तकलीफ हो। रक्षा भी करे और मंगल-मांगल्य भी दे ऐसा कुत्ता उन सारे कुत्तों से कई गुना अच्छा होता है जहां 'कुत्ते से सावधान' वाली तख्ती देखकर बाहर का मनुष्य भीतर के मनुष्य से मिलने से भय खाता है और नहीं मिलने की स्थिति में उसे कुत्तामय करार कर चलता बनता है।

यहां कोई प्लेट नहीं। कुत्ता सबका साथ निभाता है। किसी की पिंडी नहीं पकड़ता। न भौंकता काटता है। चुपचाप बैठा रहकर अपने दिन काटता है।

पोथीखाना

यादों की अनेक हलचलों के बीच मोहनभाई

मोहनभाई एक ऐसे युवकोचित उत्साह भरे क्रान्त चेतनाशील पुरुष थे जो अन्तिम स्वांस तक अपने सेवाकार्य में सक्रिय रहे। उन्होंने झेलने को सदा संघर्ष झेला पर अपने पर कभी सवार नहीं होने दिया और स्वाभिमानपूर्वक दबंग ही बने रहे। अपने जीवनकाल, 24 सितम्बर 1919 से 24 अप्रेल 2014 तक उन्होंने ऐसी हलचल दी कि कभी अपनी छाया तक को स्थिर-शिथिल नहीं होने दिया।

ऐसे ही कुछ उद्‌गार उनके साथी रहे डॉ. महेन्द्र भानावत ने 24 सितम्बर 2019 को अणुविभा राजसमन्द में आयोजित उनके जन्मशती समारोह में अध्यक्ष पद से व्यक्त किये। इस अवसर पर उनकी स्मृति में प्रकाशित 'कर्मयोगी की सृजन यात्रा' ग्रन्थ भी जारी किया गया।

मोहनभाई का सर्वाधिक सम्पर्क-क्षेत्र तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य तुलसी से लेकर आचार्य महाप्रज्ञ और वर्तमान आचार्य महाश्रमण तथा साध्वी कनकप्रभा से लेकर उन अनेक लोगों से रहा जो चोटी से लेकर एड़ी-पगडंडी तक शीर्ष से शून्य के साक्षी रहे। इसीलिए मोहनभाई के अनेक रूप, अनेक दरसाव, अनेक मैत्री पक्ष और यारबाजी के द्रष्टान्तों से उनका स्मृति ग्रन्थ सदैव ही उनकी स्मृति का स्तम्भ बना रहेगा।

चार प्रखण्डों में चार सौ से अधिक पृष्ठों में अनेक चित्रों की सन्निधि देते इस ग्रन्थ को विविध क्षेत्रों के शताधिकों ने मोहनभाई के व्यक्तित्व, विचार, कर्म और कारक को बड़ी खूबसूरती से मणि-माला की तरह पिरोया है। जिल्द के खुलते ही आचार्य तुलसी का वरदहस्त श्वेत कमल सा खिलखिलाता भाखणी देता है- 'राजस्थान के छोटे से केन्द्र से उठा, प्रचलित हुआ यह प्रयास आज विश्व शान्ति मिलयम बनने जा रहा है जिसे लोग असाधारण अद्‌भुत कहकर बतलाते हैं। जिसका निर्माता एक छोटा सा अकिंचन व्यक्ति जो न ग्रेजुएट है, न इंजीनियर है और न कुछ है, केवल मोहनलाल जैन है पर उसकी कृति को देखकर बड़े-बड़े आर्किटेक्ट व इंजीनियर आश्चर्यचकित हो रहे हैं।'

ग्रन्थ के जिल्द के अन्तिम अन्तर में आचार्य महाप्रज्ञ का यह स्मृति-सन्देश - 'वे सिद्धान्तवादी और धुनी व्यक्ति थे। अणुव्रत के पीछे मानो अपना पूरा जीवन लगा दिया।

ऐसे जीवनदानी कार्यकर्त्ता बहुत कम मिलते हैं। मोहनलालजी के पिता साधु बने थे किन्तु उनकी स्वयं की साधु बनने की भावना पूर्ण नहीं हुई फिर भी गृहस्थ जीवन में वे कुछ अंशों में साधु जैसे थे। मोहनभाई महान व्यक्तित्व से सम्पन्न थे। मैं बड़े सम्मान की भावना के साथ उनकी स्मृति करता हूं।'

मोहनभाई कवि के रूप में ख्यात नहीं हुए पर कविता उनसे कभी नहीं छूटी। अबखाई के वक्त कविता रचना कर वे हल्के हो जाते। छोटी-छोटी कवितावलियों के माध्यम से वे अपना अनुभव संसार खोलकर रख देते। उनके द्वारा काव्यगोष्ठियों के विशेष आयोजनों में डॉ. भानावत, नंद चतुर्वेदी, भगवतीलाल व्यास, प्रकाश 'आतुर', ओंकारश्री, कमर मेवाड़ी अनेक बार सम्मिलित हुए। उन्हें कोई भी किसी एक कोण में नहीं बान्ध सकता। वे सबओर सबरंग घोलते बड़े मजेदार थे।

ग्रन्थ के सम्पादक उनके कर्मयोग के सृजनवाही पुत्र संचय जैन ने बड़े मनोयोग से ग्रन्थ के खुलते ही मोहनभाई की कलम से निसृत यह कविता दी जो उनके सांगोपांग जीवन-परिवेश का ही इन्द्रधनुषी चितराम देती लग रही है-

'डांग पर रखता डेरा / नित नया सवेरा / कभी बालू के धोरों पर / कभी पहाड़ की चोटी पर / न बंधन, न घेरा / नित नया सवेरा / कभी पतझड़, कभी तूफान / कभी बसन्त नयनाभिराम / उड़ता रहता पंछी पखेरा / न कुछ तेरा न कुछ मेरा।'

अणुव्रत विश्वभारती राजसमन्द से प्रकाशित 500 रूपये मूल्य का यह ग्रन्थ बड़े ही सात्विक रूप में मोहनभाई के अनुरूप ही उन्हें दूधिया जगमगाहट देता हर पृष्ठ ही नहीं अपितु हर आखर-अक्षर बहुत कुछ कहता लगता है।

रवाँई क्षेत्र का 'भद्‌याऊ'

- दिनेश रावत -

यह लोकवासियों की विशिष्टता ही रही है कि जीवन की व्यस्तम दिनचर्या एवं प्रतिकूल मौसम को भी पर्व, त्यौहार, उत्सव मनाकर अनुकूल बना लेते हैं। लोकवासियों की इसी विशिष्टता का प्रतिफल है भाद्रपद मास में मनाया जाने वाला 'भद्‌याऊ'। भद्‌याऊ विषमताओं में साम्यता स्थापित करते हुए हास-परिहास, उमंग, उत्साह एवं उल्लास से भरा एक ऐसा पर्व है, जिसके मूल में लोकजनों का व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी समाहित है। भाद्रपद के इस त्यौहार को समूचे रवाँई में समान रूप से मनाया जाता है किंतु स्थान विशेष के आधार पर मोरी क्षेत्र में इसे 'चीड़ा' के रूप में जाना जाता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टता के धनी रवाँई क्षेत्र के लोकपर्वों में प्रमुखता से शामिल भद्‌याऊ आमूल-चूक परिवर्तन के साथ आज भी अपना वजूद बनाए हुए है। प्रचलित परम्परानुसार लोकवासी श्रावण मास अवसान एवं भाद्रपद आरम्भ यानि संक्रांति के दिन अपने-अपने घरों के मुख्य द्वार पर भद्‌याऊ लगाते हैं। घर की देहरी पर भदयाऊ स्थापित करने के लिए 'दर्बा' नामक एक विशेष प्रकार की वनस्पति या घास को उपयोग में लाया जाता है, जो घरों के आस-पास ही आसानी से उपलब्ध हो जाती है। भद्‌याऊ के लिए साफ-सुथरी जगह पर उगे दर्बा को समूल उखाड़ कर उपयोग में लाने की परम्परा है। जड़ से शिखर तक यह किसी भी प्रकार से क्षति ग्रस्त नहीं होना दर्बा चयन का मुख्य मापदंड है। भदयाऊ स्थापना हेतु कुछ खास लोक व्यंजन जैसे पाँच दोहरी रोटियाँ अर्थात 'दुनल्या', मौसमानुकूल सभी प्रकार की मिश्रित सब्जी तथा बिना पानी मिले दूध की खीर विशेष रूप से बनायी जाती है।

संक्रांति के दिन सूर्यास्त होते-होते क्षेत्रवासी भद्‌याऊ पूजन की तैयारी में जूट जाते हैं और अंधेरा होते ही सभी घरों में भद्‌याऊ अपने वजूद में आ जाता है। भद्‌याऊ स्थापना के लिए समूल लाये गये दर्बा के शिखर भाग को आगे तथा मूल को पीछे की ओर रखा जाता है। दर्बा की जड़ों में फंसी मिट्‌टी को हटाने की बजाय इसमें जौ के बीज अंकुरण हेतु डाल कर ऊपर से स्लेटनुमा पत्थर से ढक दिया जाता है।

स्थान शुद्धिकरण हेतु संबंधित स्थान का गंगाजल, जल, गौमुत्र एवं दुग्ध इत्यादि से परिवार के मुखिया द्वारा शुद्धिकरण कर भद्‌याऊ स्थापित किया जाता है। मुखिया के साथ पारिवारिक बच्चे हाथों में देवदार, कैल, चीड़ की लकड़ी के छिल्कों की मसाल रूपी प्रज्जलित बंडल थामें उत्साहित होकर सजोश 'भद्‌याओऽऽ, भद्‌याओ!! हमारऽ भितरऽ क मुस-बिराव, सब्बा .....क दारक नओ।'

पंक्तियों को दोहराते हुए छिलकों के बंडल को भद्‌याऊ के ऊपर रख देते हैं। आस-पड़ोस के बच्चों में भद्‌याऊ के ऊपर छिलके जलाते हुए हास-परिहास व मनरंजन का यह दौर महीने भर जारी रहता है। रवाँई क्षेत्र के नौगांव, पुरोला क्षेत्र के बच्चे जहाँ 'भद्‌याओऽऽ, भद्‌याओ!! हमारऽ भितरऽ क मुस-बिराव, सब्बा .....क दारक दौड़ौऽ।' तो इसी क्षेत्रांतर्गत मोरी क्षेत्र में इन्हें कुछ इस प्रकार बोला जाता है - 'चिचांडो-भदरोवों मेर चीड़ जलिगू, तेर चीड़ हिसगु,', 'तेर चीड़ गाड़ी-गाड़ऽ, मेरऽ चीड़ धारी-धारऽ'...।

घुप्प तिमिर में घर के बाहर जलते भद्‌याऊ से घर का बाहरी हिस्सा ही आभामय नहीं होता बल्कि बाल मुख से फूटती स्वर लहरियाँ भी अद्वितीय आनंद व उल्लास का एहसास कराती हैं। मुखिया द्वारा दूप, दीप, नैवेद्य, गंध, अक्षत, पत्र-पुष्प द्वारा पूजा-अर्चना करते हुए भोज्य पदार्थों का भोग लगाकर भद्‌याऊ स्थापना की रस्म पूरी होती है। पूरे महीने भर अंधेरा होते ही नित्य इस पर जलते छिल्के रखे जाते हैं और भाद्रपद समाप्ति पर इस पुन: विविधित पूज कर विस्थापित कर दिया जाता है।

लोक प्रचलित भद्‌याऊ परम्परा अंधकार से प्रकाश तथा निराशा से आशा की ओर लौटने का एक प्रमुख लोकपर्व है। इसकी जीवन्तता को बनाये रखना हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी बनती है।

डॉ. केसरी का साठ वर्षों का सृजन अर्जन

'सृजन के साठ साल' नाम से प्रकाशित पुस्तक डॉ. अर्जुनदास 'केसरी' के रचनाकर्म के समय की साक्षी है। सन् 1939 की 31 जुलाई को जन्मे डॉ. केसरी आठ दशक पार कर चुके हैं ऐसी स्थिति में यह पुस्तक उनके अभिनन्दन ग्रन्थ होने का कुछ-कुछ स्वाद तो देती ही है।

यदि उस सोच-मनोयोग से सम्पादक यशोधर मठवाल और कवीन्द्रकुमार केसरी इसका सम्पादन करते तो यह उनके रचनाकार साथियों से अधिक अच्छा समृद्ध सम्पन्न प्रयास हो सकता था।

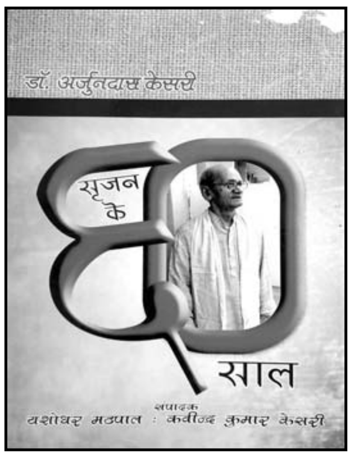

पुस्तक खोलते ही भीतर के पन्ने पर अर्जुनदास केसरी : अमृतोत्सव और साठ कृतियां प्रकाशित लिखा हुआ भी है। प्रारम्भ में भूमिका में सम्पादकद्वय ने केसरीजी के हवाले से उनके जीवन को इन शब्दों में रेखांकित किया है- 'केसरीजी सादा जीवन उच्च विचार के उदाहरण हैं। वह नगर के पैतृक बंटवारे के मकान में 10 गुना 8 के एक कक्ष में रहते हैं, जिसमें लकड़ी की चार कुर्सियां, एक चौकी पड़ी है।

कहते हैं- इनमें से एक कुर्सी को मैंने सन् 1959 में मिर्जापुर से नौ रूपये में खरीदी थी, जो मेरे जीवन तक साथ देगी और यह चौकी पचास साल की हो गई जिस पर मैं सोता हूं। यहीं आकर देश-विदेश के मेहमान बैठते हैं।'

अर्जुनदास केसरी की उपलब्धियों के पीछे कोई न कोई अदृश्य शक्ति काम करती है। वैसे केसरीजी विगत पचास-पचपन वर्षों से दुर्गाजी का पाठ करते आ रहे हैं। सभी प्रमुख तीर्थों की यात्रा सपत्नीक कर चुके हैं।

धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करते रहते हैं। बात-बात में श्लोकों, कथा-प्रसंगों का पटतर देते रहते हैं। ब्रह्म मुहूर्त में उठकर सूक्ष्म जलपान लेकर लिखने के लिए बैठ जाने की आदत उनकी बचपन से है। व्यक्ति में निष्ठा, आस्था, श्रद्धा-भक्ति, लगन, पुरुषार्थ, कार्य करने की पद्धति और सबसे बढ़कर निरंतरता बनी रहे तो वह कुछ भी कर सकता है और तब सारी शक्तियां उसके साथ जुट जाती हैं।

जिस प्रकार वटवृक्ष को विशाल बनाने में माटी-पानी, खाद, हवा, प्रकाश का महत्वपूर्ण योगदान होता है उसी प्रकार केसरीजी का कद ऊंचा बनाने में उनके माता-पिता, गुरु, भ्राता, मित्र, पत्नी, परिवार तथा स्वजनों का यथोचित योगदान रहा है। पुस्तक में विविध लेखकों के 14 लेख हैं।

अन्त में सृजन पथ का पाथेय शीर्षक से लगभग 75 पृष्ठों में समय-समय पर केसरीजी को लिखे अनेक विद्वानों के पत्रों का संग्रह है। यही भाग इस पुस्तक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग भी कहा जा सकता है जिसमें विद्वानों ने केसरीजी के जीवन को अनेक रूपों में देखा है।

संगोष्ठियों, समारोहों में आमंत्रित किया है। उनके लेखन की प्रशंसा की है। उन्हें प्रेरक, साधक तथा समालोचक के रूप में माना है। अपनी परेशिानियों से रू-ब-रू कराया है। सलाह मशविरा किया है।

उनकी पुस्तकों की समीक्षा, प्रशंसा तथा उपयोगिता को रेखांकित किया है। इससे उनकी दूर-सुदूर तक की लेखकीय पहचान और परिचित-अपरिचितों द्वारा लिखी गई टिप्पणियों से उनके जीवनदर्शन के मूल्यांकन का सही और प्रामाणिक मूल्यांकन का पता चलता है। अब मोबाइल और कम्प्यूटर की सांस्कृतिक विरासत ऐसी पाले पड़ी है कि लिखने-पढ़ने, सोचने-समझने तथा मन को खोलकर रख देने की सारी सुविधाएं हवा हो गई हैं।

स्मृतियों के शिखर (87) : डॉ. महेन्द्र भानावत

किसना ने महाराणा जवानसिंह को कविता करना सिखाया

मेवाड़ राज्य शौर्य एवं पराक्रम की दृष्टि से तो अभूतपूर्व रहा ही किन्तु साहित्य, संस्कृति, कला, धर्म आदि की दृष्टि से भी उल्लेखनीय योगदान लिए रहा जो इतिहास तथा लोकजीवन में स्मरणीय बना हुआ है। महाराणाओं की वंश परम्परा में कई महाराणा तथा उनके सगे-सम्बन्धियों ने साहित्य रचना द्वारा भारतीय विद्या को श्रीसम्पन्न किया। इनमें महाराणा जवानसिंह ने बृजभाषा तथा पिंगल में फुटकर कविता लिखी। उदयपुर के सरस्वती भण्डार में इन कविताओं की तीन हस्तलिखित प्रतियां सुरक्षित हैं। एक प्रति साहित्य संस्थान में है।

महाराणा जवानसिंह का जन्म संवत् 1857 मार्ग शीर्ष शुक्ल तृतीया को हुआ। 28 वर्ष की उम्र में उनका राज्याभिषेक हुआ। उन्होंने कुल दस वर्ष राज्य किया। संवत् 1895 भाद्रपद शुक्ल दशमी को उनका निधन हुआ। कविता करना उन्होंने किशनाजी आढ़ा से सीखा। इसके लिए किसनाजी ने महाराणा को कविप्रिया पढ़ाना आरम्भ किया। संवत् 1882 फाल्गुन कृष्णा 4 रविवार को महाराणा ने कविता करने का श्रीगणेश किया। इस दिन लिखा गया उनका पहला पद यह था-

केसरियौ कुंवर मिझमान छै रंगभीनी लाड़ी।
आनंदकर सब साज बनाऔ अतर अगर अर पान छै।
गिरधर स्याम सुजान रसीलौ नंद महर को कान छै।
श्री ब्रजराज किसौर मनोहर प्रानन हू को प्रान छै।

इसके बाद दूसरा पद इसी वर्ष की चैत्र कृष्णा 2 शनिवार को लिखा जो इस प्रकार है-

राधेजी म्हारो मन बस कीनौ हो
हौ जी म्हानी प्रान री प्यारी राधै।
रूप अनुपम सुंदर अत हो अंग रंग भीनौ हो।
श्री ब्रजराज सुजान सनेही बचन अधीनौ हो।।

कविता में महाराणा अपना उपनाम 'ब्रजराज' लिखते थे। उनका लिखा आखिरी पद राग परज में यह लिखा मिलता है-

कहां खेली पिउ फाग हौ ब्रज में।। टेक।।
जा तिय कै निस जागै मोहन ताही को बड़ भाग।
काके हाथ रंगै ही रंग में वाको परम सुहाग।
श्री ब्रजराज आज भौंरन के लसत अधर दल दाग।।

सरस्वती भण्डार की हस्तलिखित प्रति संख्या 369 में 81 पद्यों का रचना काल दिया हुआ है। महाराणा जवानसिंह के समय लिखी गई इस प्रति में स्पष्टत: लिखा गया है कि महाराणा कविताएं लिख-लिख किशनाजी को देते जो इसमें अंकित करते। पृष्ठ 13 पर लिखा उल्लेख इस प्रकार है-

'अथ संमत 1883 रा वैसाख सुद 7 गुरे रे दिन महाराजकंवार श्री 108 श्रीश्री जवानस्यंघजी आढ़ा किसना तीरा सूं भणवा रौ समौहरत कीधो सो प्रथम ग्रंथ कविप्रिया पढ्या नै कवित्त-दूहा बणावा रो पण प्रारम्भ कीधो सो मास 1 दन 2 तौ कविप्रिया हीज अर्थ सहेत पड्या ने जेठ सुद 9 सौमै रा दिन सूं कवित्त-दूहा बणावा लागा जी दन सूं ही बणाय किसणा नै हुकुम हुवौ कै किसनजी थे दूहा-कवित्त मांहरा बणाया लिष लीज्यो। श्री हजूर सूं पोथी त्यार कराय बगसी जीमें श्री हजूर का बणाया दूहा-कवित्त सवैया छपै आद ख्याल और सरबत्र छन्द सो लिषस्यां।'

किसनाजी आढ़ा के वंशज केसरीसिंह आढ़ा ने 23 सितम्बर 1964 को मुझे बताया कि किसनाजी ने कुंवर जवानसिंहजी तथा अपने लड़के महेशदास को काव्य की शिक्षा देने हेतु 'रघुवर जस प्रकाश' नामक ग्रन्थ की रचना की जो प्रकाशित है। महेशदास विवाह के बाद ही चल बसा। तब उनके छोटे भाई के लड़के रामलाल को गोद लाया गया। रामलाल शरीर से खूब मोटा था। उसे इत्र लगाने और खाना खाने का बड़ा शौक था।

चंपा नामक उनका खास घोड़ा था जिसे दोनों समय छककर दूध-जलेबी खिलाई जाती थी। महेशदास की पत्नी बड़ी धर्मात्मा थी। जनता के कल्याण के लिए उसने कई जगह कई तरह के कार्य करवाए। मुख्य रूप से उसके द्वारा बनवाये गए चारभुजा के नाम से बारह मन्दिर तथा बारह बावड़ियां जनजीवन में बड़ी लोकप्रिय रहीं। किसनाजी ने जो धन-सम्पदा एकत्र की, वह अधिकांश महेशदास की पत्नी ने ज्ञान हितार्थ खर्च कर दी। बिचारे रामलाल को नहीं के बराबर सम्पदा हाथ लगी। इस प्रसंग का केसरीसिंह आढ़ा ने यह छन्द सुनाया जो बहुप्रचलित रहा-

किसनै धन कियो कित्तौ वसुधा जाहर वात।
और लगायो पुत्र रथ म्हारे हुक्को आयो हाथ।।

यह हुक्का चांदी का बना हुआ था। आज तो 'कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है' पर तब न केवल राजघराने में बल्कि सामान्य जनता जनार्दन में भी कविता करने-कराने का विधिवत शिक्षण दिया जाता था।

केसरीसिंह आढ़ा को अनेक कविताएं, कथा-किस्से, गल्प-प्रहसन याद थे। उनसे बात-बात पर कहावतें और मुहावरे निकलते थे। अनेक कहावतों की कहानियां भी उन्हें याद थीं। प्रारम्भ में वर्षों तक वे मेरे साथ भारतीय लोककला मण्डल में खोज विभाग में रहे फिर देवीलाल सामर द्वारा व्यवस्था मंत्री बना दिये गए। लोककला मण्डल द्वारा अनेक खोज-यात्राएं हम साथ-साथ करते थे। उनकी जानकारी का उपयोग मेरे द्वारा लिखित-सम्पादित अनेक पुस्तकों में किया गया। वे अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे मगर बड़े प्रतिभावान और बातों के माध्यम से बढ़े-चढ़े रसज्ञ रसराज ही थे जो अपना प्रभाव बनाये रखते थे।

सन् 1964 से 1967 तक मैंने साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ में रहकर महाराणा जवानसिंह लिखित पदों का चार हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर पाठ सम्पादन किया। 'ब्रजराज काव्य माधुरी' नाम से यह संकलन संस्थान से सन् 1966 में प्रकाशित हुआ। इसमें 'ब्रजराज' छाप के कुल 296 पद संग्रहीत हैं। उन्हें मैंने तीनों भागों में वर्गीकृत किया है। इसके अनुसार विनय माधुरी में 43, शृंगार माधुरी में 102 तथा पद माधुरी में 147 पद हैं। इसके प्रकाशन का समस्त व्यय मेवाड़ महाराणा श्री भगवतसिंहजी ने प्रदान किया।

ये महाराणा भी अन्यों की तरह साहित्य, संस्कृति, इतिहास, शिक्षा तथा संगीत के परम प्रेमी तथा पृष्ठपोषक रहे। विविध क्षेत्रों के गुणीजनों, विद्वानों तथा छात्रों का सम्मान तथा सहयोग करने हेतु उन्होंने महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन की स्थापना की जिसके अन्तर्गत प्रति वर्ष ही प्रदेश, देश तथा विदेश के विशिष्टजनों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाता रहा।

इस पुरस्कार से जुड़ी एक घटना मुझे सदैव याद रहेगी। एकबार महाराणा ने प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ और डॉ. एच. आर. त्यागी से सलाह-मशविरा कर फाउण्डेशन द्वारा मुझे पुरस्कृत करने का विचार बनाया किन्तु मेरा क्षेत्र कला-संस्कृति का होने के कारण तब इस क्षेत्र का कोई पुरस्कार नहीं था। इस पर महाराणा ने महाराणा सज्जनसिंह के नाम से पुरस्कार प्रारम्भ किया। यह घटना सन् 1984 की है। इस समारोह में मेरे अलावा डॉ. धर्मवीर भारती, पं. जनार्दनराय नागर तथा अल्लाजिलाईबाई भी सम्मानित हुए।

वर्तमान में महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के पुरस्कार बड़े व्यापक रूप में अपनी प्रामाणिकता तथा गुणवत्ता के कारण पूरे विश्व में सम्मानजनक ख्याति लिये हैं। इसका समग्र श्रेय महाराणा भगवतसिंह के सुयोग्य वंशज श्रीजी अरविन्दसिंहजी मेवाड़ को है जो बड़ी निष्ठा और सूझबूझ के साथ कीर्तिवन्त बने हुए हैं।

साहित्य संस्थान में तब राजस्थानी भाषा साहित्य और इतिहास के प्रसिद्ध ज्ञाता एवं लेखक डॉ. मोतीलाल मेनारिया डाइरेक्टर थे। उन्होंने पुस्तक की भूमिका में लिखा- 'ग्रन्थ के प्रारम्भ में महाराणा जवानसिंह के व्यक्तिगत जीवन, उनकी काव्य प्रतिभा आदि पर प्रकाश डाला गया है। अन्त में तीन परिशिष्ट हैं। इनमें इतिहास व साहित्य विषयक बहुत उपयोगी सामग्री का समावेश हुआ है।

श्री भानावत द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें 'ब्रजराज' की भाषा के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखा गया है। भाषा को एकरूपा बनाने के लोभ से इनको कहीं बदला नहीं है। इससे ब्रजराज की भाषा का असली स्वरूप निखर आया है।' (पृ. 19)

मेवाड़ राजघराने की यह विशेषता रही कि यहां के लगभग सभी महाराणा काव्य प्रतिभा लिये अच्छे रचनाकार रहे। महाराणा कुंभा से लेकर महाराणा उदयसिंह, प्रतापसिंह, अमरसिंह, राजसिंह, अरिसिंह, भीमसिंह, अमरसिंह, स्वरूपसिंह, शम्भूसिंह, सज्जनसिंह सभी ने अपनी काव्य-प्रतिभा का उत्कृष्ट परिचय दिया। इसी घराने से जुड़े मीरांबाई, बावजी चतरसिंह तथा महाराणा भूपालसिंह की रानी बड़थकुंवरी द्वारा लिखी रचनाएं मुख्यत: गायक महिलाओं में सर्वाधिक व्याप्त हुईं।

रानी बड़थकुंवरीजी की प्रमुख सेविका सीताबाई के माध्यम से मैंने सर्वऋतु विलास स्थित उनके महलों में भेंट की और उनके द्वारा लिखित 'श्री माताजी रा गीत' व 'श्री हजूर की भावना' नामक 95 गीतों की पुस्तक प्राप्त की। वे बड़ी सहृदया, भक्तिमती किन्तु बहुत सधी हुई शिकारी भी थीं।

उन पर 'महारानी की शिकार कथा' नाम से मैंने एक विस्तृत आलेख लिखा जो धर्मयुग में प्रकाशित हुआ। सीताबाई ने मुझे उनकी बेशकीमती वे साड़ियां भी दिखाईं जिन पर बहुत ही बारीक और कलात्मक शिकार के बड़े अनोखे मनभावन कलाबूती चित्र बनाये हुए थे। उन साड़ियों को लेकर भी मैंने लेख लिखा जो कई जगह छपा।

मीरां पर डॉ. भानावत की नई खोज

डॉ. महेंद्र भानावत ने मीरांबाई से संबंधित राजस्थान के अलावा गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रदेशों की यात्रा कर अनेक लोगों से भेंट की और मीरांबाई पर सटीक जीवनी लिखी। इसका प्रकाशन 'निर्भय मीरां' के नाम से सन् 1994 में हुआ।

मीरांबाई पर समग्रत: नई खोज-दृष्टि लिये सन् 1982 से 87 के बीच की गई इन खोजयात्राओं में लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के प्रधान सेवक श्री सरजुदासजी वैष्णव हमारे मार्गदर्शक रहे। ये यात्राएं विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक, भक्ति वत्सल रहस्यमय रहीं। पुस्तक में नवीन ज्ञातव्यों में लिखा कि मीरांबाई के नाम-छाप से पूरे देश में विविध प्रान्तों की भाषा-बोलियों तथा वाणियों में हजारों पद गाये और लिखे जा रहे हैं किन्तु मीरां सदैव कृष्ण भक्ति में आकण्ठ डूबी रही। यह भक्ति सर्वस्व समर्पण की थी जिसमें पद रचना की जरा भी सम्भावना नहीं थी।

मीरां ने जिन विशिष्ट सन्तों, महन्तों, भक्तों तथा कवियों से भेंट की उनमें चित्तौड़ में रैदास से, वीरपुर में जलाराम से, वृन्दावन में जीव गोस्वामी से, डाकोर में तुलसीदास से, गिरनार में नरसी मेहता से, कोल्हापुर में शिवाजी-जीजाबाई से, काशी में रामानन्द, रसखान, कबीर से तथा पंढरपुर में गुरु रामदास से की गई भेंटें विशेष उल्लेखनीय रहीं।

द्वारिका में संवत् 1654, माघ कृष्णा अमावस्या को मीरां ने समुद्र समर्पण किया। डॉ. भानावत ने इन सभी पवित्र तीर्थ स्थलों की यात्रा की।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 नवम्बर 2019

सम्पादकीय

नया चेहरा तलाशती किताबें

बदलते समय-सन्दर्भ में इन्टरनेट तथा डिजिटल तकनीक ने पारम्परिक माध्यमों को एक किनारे कर दिया है। उनमें से पुस्तकों, पाठ्य-पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं को बड़ा सदमा लगा है। पाठक कम हो गये हैं। पढ़ाकुओं के हाथों में पाठ्य-पुस्तकें नजर नहीं आतीं और पत्र-पत्रिकाओं के प्रति जो ममत्व था, वह अब देखने को नहीं मिलता। ऐसे लोग मिल जायेंगे जिन्होंने अपनी लाइब्रेरी की जगह खाली करनी शुरू कर किताबें कबाड़ी के हाथों लबाड़ी करदीं।

अब नई किताबों की तटस्थ समीक्षा करने वाली पत्रिकाएं भी नहीं रहीं। पहले से लेखक अपने पास अपनी ठकुर सुहाती मनभावन समीक्षा रखता है। लोकार्पण के मापदण्ड भी बदल गये हैं। लेखक के परिजन भी मंचासीन होते देखे। यहां तक कि लेखक के श्वसुर गृह के लोग भी इस अवसर पर दामाद लेखक के लिए दस्तूर रूप में झग्गा-पाग लाकर विवाह-सा माहौल बना देते हैं।

पहले नई पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं की प्रतीक्षा रहती। मांग-तांग कर पढ़ाई करते। लाइब्रेरी, वाचनालय पढ़ने वालों से भरे रहते। अब पुस्तकालय ऊंघ रहे हैं। उनकी धूल भी झाटकने में नहीं आती। पड़ी-पड़ी पुस्तकें उदई के हवाले कर चलो कोई तो उपयोग कर रहा है, सोचने को नियति बन गई है।

नानी-दादी में भी अब कहानियों का उड़न खटोला नजर नहीं आता। अब वैसी नानी-दादी भी नहीं तो वैसे टाबर-टाबरी भी नहीं रहे। उनकी आंखों में मोबाईल पर ऊंगलियों की आवाजाही ने कब्जा कर रखा है। उसके मारे एक-से-एक रंगीन मिजाजी दृश्य उन्हें लुभाने लग गये हैं। हर संध्या को होने वाली अली गली चौपाल की मिलन की बैठकें जाती रहीं। संग-संग खेले जाने वाले खेल हवा हुए। चुटकुले, हास्य कथाएं, परियों का आना-जाना, पहेली बुझौवल, अटली-मटली, घोड़ा चढ़न के उतर भीखा, गिल्ली डंडा, ताश कूटनी सब छू मंतर रफ्फू चक्कर हो गये।

नई पीढ़ी का स्वतंत्र सोच होने से किताबों की स्थिति कटी पतंग जैसी हो गई। व्यस्ततम जिन्दगी में अनेक नई चीजें महत्व पाने लगी हैं। रहन-सहन, खान-पान, बन-ठन के शौक, ऑनलाइन ऑर्डर के तौर तरीकों द्वारा दूसरी दुनियां दिखा दी लगने लगा है।

1250 किसानों को उन्नत बीज वितरित

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक के कृषि आधारित आय संवर्धन के लिए संचालित समाधान परियोजना के तहत जावर माइन्स के आसपास के 12 गांवों के 1250 किसानों को रबी फसल की उन्नत उत्पादकता के लिए गेहूं की उन्नत किस्म राजसीड 4037 बीज का वितरण किया गया।

इसमें टीडी, जावर, अमरपुरा, चणावदा, सिंघटवाड़ा, कृष्णपुरा, ओड़ा, रेला, नेवातलाई, पाडला, रवा व कानपुर के किसानों को सम्मिलित किया गया। साथ ही पिछले तीन वर्षों से समाधान परीयोजना में किसानों की बढ़ती अभिरूचि को देखते हुऐ इस वर्ष उपरोक्त गांवों के 250 नये किसानों को भी जोड़ा गया जिन्हें 20 किलो राजसीड 4037 किस्म के बीज एवं 25 किलो पोषक तत्व के पैकेट देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

कार्यक्रम में बायफ टीम के रविकांत तिवारी ने किसानों को गेंहू की लाइन सोंइग व बीज उपचार का प्रशिक्षण दिया। इस दौरान किसानों ने पिछले तीन वर्षों से परियोजना के अन्तर्गत लाईन सोंइग द्वारा गेहूं के बढ़ते उत्पादन पर अपने अनुभव साझा किए। सीएसआर प्रबंधक आनंद चक्रवर्ती, शुभम गुप्ता तथा नरूति सांघवी ने अधिकाधिक जैविक खेती तथा लाईन सोंइग से खेती करने की अपील की। बीआईएसएलडी टीम से संकुल प्रभारी महीपाल सिंह, राजकुमार मीणा, हीरालाल जनवा, देवेद्रसिंह तथा सीएसआर टीम से बद्रीलाल मीणा, मोहन मीणा, प्रेम मीणा व अन्नपुर्णा ने परियोजना सबंधित फीडबैक लिया।

मानवता का मसीही सन्त डॉ. रामकुमार अग्रवाल

- महेश शर्मा -

कैंसर की तीसरी स्टेज पर पहुंचे मरीज के सीने पर बड़े घाव से रिसता बदबूदार मवाद व गरीबी के कारण इलाज करवाने में सर्वथा असमर्थ मरीज। भगवान हर जगह तो उपस्थित नहीं हो सकते, इसीलिए शायद उन्होंने डॉ. रामकुमार अग्रवाल को मरीजों की सेवा के लिए भेजा है। ऑपरेशन की सारी व्यवस्था भी डॉ. अग्रवाल को ही करनी है। खून से लेकर दवाइयां व ऑपरेशन थियेटर तक सब कुछ जुटाना है। सुबह उठकर विद्याभवन पॉलीटैक्नीक कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना के दो छात्रों से दो बोतल खून की व्यवस्था के बाद निशुल्क थियेटर की व्यवस्था के लिए मरीज को अपनी कार में लिटाकर एक चिकित्सालय से दूसरे के चक्कर लगाकर आखिर डॉ. अग्रवाल कामयाब हो जाते हैं।

सफल ऑपरेशन के बाद अपने घर पहुंच कर कार के चारों दरवाजें खोल, अन्दर अगरबत्ती जलाकर रखते हैं। मरीज के घावों से उठ रही बदबू से निजात पाने का यही एकमात्र उपाय था और फिर तीसरे प्रहर सुबह का खाना खाकर अपना स्कूटर लेकर डॉ. अग्रवाल अपने अभियान पर निकल पड़ते हैं। उल्लेखनीय है कि इस मरीज द्वारा गांवों में अन्धविश्वास के चलते अपने घावों पर 'डाम' लगाकर हालत खराब कर दी थी, जिसे एक मोबाइल कैंप में देखने के बाद डॉ. अग्रवाल उदयपुर आए थे।

यह एक दिन की दिनचर्या है डॉ. अग्रवाल की लेकिन हर रोज की ही उनकी दिनचर्या ऐसी ही है। उदयपुर के आरएनटी मेडिकल कॉलेज के सर्जरी विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष रहते डॉ. अग्रवाल गम्भीर से गम्भीर मरीजों को भी अपने वार्ड में भर्ती कर लिया करते थे, जिन्हें शायद अन्य डाक्टर भर्ती करने में अपनी ख्याति के लिए जोखिम समझते थे।

डॉ. अग्रवाल का मानना था कि मौत जीवन का शाश्वत सत्य है और मौत के बिना जीवन अधूरा है, किन्तु बीमार, पीड़ित, असहाय व्यक्ति के जीवन के अन्तिम क्षणों में उसकी पीड़ा को कम किया जा सके व उसे अन्तिम यात्रा पर भूखे पेट नहीं निकलना पड़े तो यह भी संतोष सुख है। तभी तो वे सड़क पर पड़े लावारिस व अन्तिम सांसें गिन रहे बीमार को भी अपने वार्ड में भर्ती कर लिया करते थे। जहां 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध से ही भ्रूण हत्या बहुत से चिकित्सकों के लिए 'ल्युक्रेटिव बिजनेस' बन गया, वहीं अद्भुत प्रतिभा के धनी डॉ. रामकुमार अग्रवाल ने इस कहावत को चरितार्थ किया कि मरीज के लिए डाक्टर भगवान का रूप होता है।

03 मई 1929 को भीलवाड़ा जिले के बनेड़ा गांव में जन्मे रामकुमार को गरीबों, असहायों व बीमारों की सेवा की प्रेरणा अपने माता-पिता से मिली। जयपुर से 1959 में जनरल सर्जरी में एमएस करने के बाद डॉ. अग्रवाल ने कनाडा से शिशु सर्जरी में उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर वहां बसने की बजाय अपनी मातृभूमि को ही अपना कर्म क्षेत्र बनाने की ठानी। मद्रास व मुम्बई में रहकर कैंसर कीमोथैरेपी व अन्य प्रशिक्षण लिए। सेवानिवृत्त होने के बाद तो डॉ. अग्रवाल दुगुने जोश से उदयपुर क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि देश के दूरदराज के क्षेत्रों में जाकर गरीबों का इलाज करते रहे।

अपने बीकानेर प्रवास के दौरान एक दिन मुंडसर गांव की एक महिला अपने नन्हे से जिगर के टुकड़े को डॉ. अग्रवाल के पास लेकर आई। चादर में लिपटे उस सुन्दर, स्वस्थ बालक के चेहरे को देखकर डॉ. अग्रवाल एक क्षण ठिठक गए कि इस स्वस्थ बालक को क्यों लाया गया है, जो उन्हें एकटक, हसरत भरी निगाहों से देख रहा है परन्तु दूसरे ही क्षण जब मां ने अपने लाड़ले को चादर से बाहर निकाला, उनका हृदय द्रवित ही नहीं हुआ, टूट चुका था।

ऐसे सांसारिक कष्टों को देखकर तो महापुरुष भी 'तथागत' हो जाता है पर डॉ. अग्रवाल ने संन्यास नहीं लिया। बालक के चारों हाथ-पैर नहीं थे। उन्होंने इस चुनौती को स्वीकार कर उस नन्हें बालक को दस वर्षों तक अपने पास रखा। कृत्रिम हाथ-पैर लगवाकर उसे वास्तविक तौर पर अपने पैरों पर खड़ा ही नहीं किया बल्कि साइकिल चलाना भी सिखाया।

यह बालक मणिराम था जो आज सम्मानपूर्वक नौकरी कर अपना जीवनयापन कर रहा है। एक और युवक जोराराम था जिसके दोनों हाथ करंट से कोहनी तक जल गये थे। उसे अपने पास रखकर कोहनी के बल साइकिल चलाना सिखाया और स्वावलम्बी बनाया। ऐसे कई उदाहरण हैं, जिनमें डॉ. अग्रवाल ने विकलांगों व असहायों को आत्मनिर्भर बनाकर पैरों पर खड़ा किया।

डॉ. अग्रवाल ने उदयपुर में मूक-बधिर विद्यालय, छात्रावास, कैंसर सोसायटी व अस्पताल में कोबाल्ट प्लान्ट की स्थापना की। वे अस्पताल के बीमारों के साथ जेल में बन्द हर कैदी को भी मानसिक बीमार की श्रेणी में मानते थे। कहते कि मानसिक चिकित्सालय व जेल का सीधा सम्बन्ध है अत: कैदियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने की अहम आवश्यकता है।

एक दशक तक लगातार प्रति रविवार वे जेल में जाकर नैतिकता एवं महानता का पाठ पढ़ाते रहे ताकि कैदियों को फिर से समाज की मुख्यधारा में लाया जा सके। विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिविर लगाकर उन्होंने स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कीं। तम्बाकू, गुटखा व शराब के घातक प्रभावों से आमजन को अवगत कराने व उनकी लत छुड़वाने के लिए उन्होंने युद्धस्तर पर राष्ट्रीय अभियान छेड़ा। उनके द्वारा तैयार किये गए लाखों पोस्टर, पेम्पलेट व होर्डिंग देश में ही नहीं, विदेशों में भी अपना सन्देश दे रहे हैं।

मानवता के प्रति सेवा के लिए डॉ. अग्रवाल को विभिन्न राष्ट्रीय, सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं ने सम्मानित एवं पुरस्कृत किया। उन्हें चिकित्सा क्षेत्र का सर्वाधिक प्रतिष्ठित डॉ. बी. डी. राय अवार्ड भी राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया।

डॉ. अग्रवाल ने न केवल गरीबों व बेसहारों की सेवा की अपितु 15 जुलाई 1972 की काली रात में बाकानेर के जस्सूसर गेट के पास रोते-बिलखते मूक-बधिर बालक को पालपोस कर अपना दत्तक पुत्र बनाया और परिवार का अंग बनाया।

मानव धर्म का कोई प्रणेता, धर्मगुरु या सर्वोच्च मठ होता तो निरन्तर बीमारों, दीन-दुखियों, गरीबों, बेसहारों व विकलांगों की अनवरत सेवा का उदाहरण बने डॉ. अग्रवाल को उनके जीवन काल में ही सन्त की उपाधि से सम्मानित करता। सच तो यह है कि वे मानवता की विलुप्त होती उन प्रजातियों में से थे जिनके समाप्त होने का अनवरत खतरा बना हुआ है किन्तु वे मानवता की पल-पल विलुप्त होती संवेदनाओं को निरन्तर अपने सेवा-भाव से जीवित रखने के प्रयास में आज भी हमारे बीच एक आदर्श बने हुए हैं।

डेनिस द्वारा जूतों की पूजा

हमारे यहां महापुरूषों के पगल्ये स्थापित कर उनकी पूजा करने का बड़ा पुण्य माना गया है। विशिष्ट त्यौहारों पर आंगन के मांडणों में पगल्यों के मांडणों का भी बड़ा महत्व बताया गया है। दीवाली पर तो प्रवेश द्वार से लेकर तिजोरी स्थान तक लक्ष्मीजी के पगल्ये मांडकर लोग ऋद्धि समृद्धि प्राप्त करते हैं। बहुत से लोग सोने चांदी के पगल्ये अपने गलों में धारण करते हैं। यही स्थिति जूतों की भी कही जा सकती है। ऋषि मुनियों की खड़ाऊ को भी लोग बड़ी पवित्र मानते हैं। गांधीजी की खड़ाऊ भी उसी तरह दर्शनीय बनी हुई है।

लेकिन उदयपुर में सित्तर वर्ष से अधिक उम्र काटने वाले डेनिश डिसोजा का जूता प्रकरण इन सारे सन्दर्भों से भिन्न है जो अपने आप में बड़ा अजूबा तो है ही पर एक मिसाल भी है। डेनिश कब कहां जन्मे, कौन माता-पिता थे, कुछ नहीं जानते थे। कैसे उनका बढ़ावा हुआ उन्हें कुछ नहीं मालूम। सन् 1946 में हैदराबाद में एक छोटे से लड़के की स्थिति में उन्होंने एक होटल में नौकरी की जहां दिन रात होटल वाले की झिड़कियां गालियां और लातें खाते और सुबकियां लेते-लेते काम करते।

होटल वाला अपनी गाड़ी धुलाता तो अपनी आंखों को भी धो लेते मगर निरन्तर सीखने की प्रवृत्ति बनी रही। कभी उसको नुकसान पहुंचाने की भावना नहीं आई। इसी गुण ने डेनिश को गाड़ी चलाना सिखा दिया तो वहां के हिन्दुस्तान कोर्पोरेशन में नौकरी मिल गई। चार आने रोज में डेढ़ आने की गुड़ कॉफी और ढाई आने के चावल लेकर गाड़ी पूछने के जूट को जला ऑइल के डिब्बे में ही खीचड़ी बना पी लेते। वहीं एक दिन उदयपुर के श्यामजी की निगाह ने डेनिश को परखा और अपने घर खाना बनाने को रख लिया।

श्यामजी वैद्य अमृतलालजी के सुपुत्र थे। अत: वे इन्हें उदयपुर ले आये। यहां वैद्यजी ही डेनिश के डेडी बन गये। उनके जूतों की पालिश करना, कपड़े धोना, हाथ पांव दबाना, खाना खिलाना उनका मुख्य कार्य था पर तकनीकी दिमाग होने से डेनिश ने जिस कार्य को हाथ में लिया उसमें पूरी सफलता मिली। सेवाश्रम में केमिस्ट का काम किया। ईंटों के भट्टे का काम किया। डेनिश स्टोन प्रा.लि. नाम से एक फर्म भी खोली। हर मशीनरी काम में डेनिश की ऊंगलियां और मस्तिष्क जादुई चिराग की तरह चलता।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात डेनिश की सेवाधर्मिता है। डेनिश भारतीय लोककला मण्डल की नौकरी में होने से या तो कलामण्डल या सेंटपाल स्कूल में या फिर जहां एक सेवाभावी इन्सान की जरूरत होती वहां दिखाई देते। हर दुखियों और असहायों के लिए हर समय आगे रहने वाले डेनिश भगवान पर पूर्ण आस्थावान हैं। सब कुछ वही है परन्तु यह भी सत्य है कि जिसने उनके जीवन को ठीक से जीने योग्य बनाया वे वैद्य अमृतलालजी थे जिनको उन्होंने इन्सानों के बीच अपना भगवान माना और अन्तिम समय तक उनके जूतों की पालिश किया करते रहे। वे जूते अब भी अपने घर में रखे हुए हैं। जब भी बाहर जाते, आते हैं उनकी पूजा करते हैं।

आज डेनिश पूर्ण परिवारी हैं। वे बताते हैं हैदराबाद में सड़क पर केला खाते व्यक्ति को देख कभी-कभी उन्हें भी केला खाने की इच्छा होती। एकबार वे केला खरीद रहे थे तभी एक गाय उनके पास पहुंची और उनकी ओर देखने लगी तब वह केला उन्होंने गाय को खिला बड़ा सुख महसूस किया।

भारतीय लोककला मण्डल में बस संचालन करते उन्होंने पूरे देश में देवीलाल सामरजी के साथ कलायात्राएं कीं। मंचीय व्यवस्था संभाली और अनेक नये प्रयोग किये। पढ़े-लिखे नहीं होते हुए भी वे फर्राटे की अंग्रेजी बोलते हैं और अपना प्रभाव छोड़ सबको अपना बना लेते हैं। यही कारण रहा कि उनके रहते एक भी दुर्घटना नहीं घटी। समय व्यर्थ नहीं गया और अपने व्यवहार से कलामण्डल को आर्थिक परेशानियों से मुक्ति दिलाई।

कवि दुरसा द्वारा अकबर के दरबार में प्रताप की प्रशंसा

दुरसाजी आढ़ा ने मारवाड़ राज्य के धूंदला गांव में एक गरीब चारण के घर में वि. सं. 1592 में जन्म लिया। ये आढ़ा गोत्र के चारण थे। उनके जीवन सम्बन्धी कई ऐसी कथाएं राजस्थान में प्रचलित हैं जिनसे उनके ऊंचे व्यक्तित्व, अगाध देशप्रेम तथा स्वतंत्र प्रकृति का पता लगता है।

कहा जाता है कि जिस समय अकबर के दरबार में महराणा प्रताप की मृत्यु का समाचार पहुंचा, उस समय दुरसाजी भी वहीं उपस्थित थे। अकबर प्रताप का शत्रु अवश्य था पर साथ ही वह मनुष्य की सच्ची परीक्षा करना भी जानता था। प्रताप जैसे वीर के निधन से उसे भी भारी दु:ख हुआ और एक लम्बी सांस खींचकर डबडबाई आंखों से वह पृथ्वी की ओर देखने लगा। दरसाजी बादशाह की विचार वेदना को ताड़ गए और उसकी मुखाकृति से उसके दिल के भाव समझ कर उन्होंने यह छप्पय कहा-

अस लेगो अणदास, पाघ लेगो अणनामी।
गौ आड़ा गवड़ाय, जिको बहतो धुर वामी।।
नवरोजे नह गयो, न गौर आतसां नवल्ली।
न गौ झरोखां हेठ, जेथ दुनियांण दहल्ली।।
गहलोत राण जीती गयो, दसण मूंद रसणा डसी।
नीसास मूक भरिया नयण, तो मृत साह प्रतापसी।।

अर्थात् - हे गुहिलोत राणा प्रतापसिंह! तेरी मृत्यु पर बादशाह ने दांतों के बीच जीभ दबाई और निश्वास के साथ आंसू टपकाए, क्योंकि तूने अपने घोड़े को दाग नहीं लगने दिया, अपनी पगड़ी को किसी दूसरे के सामने नहीं झुकाया, तू अपने यश के गीत गवा गया, तू अपने राज्य के धुरे को बाएं कन्धे से चलाता रहा, नौरोज में नहीं गया, न शाही डेरों में गया, कभी शाही झरोखों के नीचे खड़ा न रहा और तेरा रौब दुनियां पर गालिब था, अतएव सब तरह से विजयी रहा। इसे सुनकर दरबारियों ने अनुमान लगा लिया कि बादशाह दुरसाजी पर अवश्य क्रुद्ध होगा परन्तु उसने तो उल्टा उन्हें इनाम दिया और कहा कि इसी ने मेरे भाव को ठीक-ठीक समझा है।

अजूबे अनोखे विवाह

(1) मृत्यु के बाद विवाह :

मनुष्यों और वनस्पतियों की शादी से भी मनुष्य को सन्तोष नहीं हुआ तो उसने मृतात्माओं तक को विवाह बन्धन में बान्ध लिया। पिछले जन्म की अतृप्त आकांक्षा के चलते लोकजीवन में ऐसे कई घटना-प्रसंग हैं जब अगले जन्म में वे आकांक्षाएं पूरी हुईं।

राजस्थान में लोकदेवता पाबूजी को लक्ष्मण का और सोढ़ी को शूर्पणखां की अवतार कहा जाता है। शूर्पणखां लक्ष्मण से विवाह रचाना चाहती थी। उसके इस प्रस्ताव को लक्ष्मण ने न केवल ठुकरा दिया अपितु उसके नाक-कान तक काट दिये। बाद में उसका पछतावा लक्ष्मण को हुआ कि यह दुष्कृत्य हुआ।

अगले जन्म में पाबूजी का विवाह सोढ़ी से होना निश्चित हुआ। चंवरी में उन्होंने तीन फेरे लिये थे कि उन्हें खबर मिली, देवल चारणी की गायें जिंदराव खींची ने घेरली है। यह सुनते ही पाबूजी उठ खड़े हुए। उन्होंने खींची से युद्ध किया और अपने प्राण गंवाये।

उल्लेखनीय है कि पाबूजी ने देवल चारणी से इस शर्त पर कालमी घोड़ी प्राप्त की कि यदि कोई उसकी गायें घेर ले जायेगा तो वे प्राण देकर भी पहले उसकी रक्षा करेंगे।

कहते हैं, मृत्यु के बाद भी जो इच्छाएं आधी अधूरी रह जाती हैं उन्हें मृतात्माएं पूरी करती हैं पर माध्यम के रूप में तो पुरुष ही होते हैं। यही सोच कर न केवल भारत में, विदेश में भी ऐसी घटनाएं घटीं पाई गईं।

मलेशया के पेनांग रिसोर्ट द्वीप में स्थित एक मन्दिर में मृतक लड़के-लड़की का विवाह कागज के बने पुतलों के रूप में कराया गया। मृतक दूल्हे का नाम ची यू कुवान था। दुल्हन का नाम चीह बेंग एंग था। दूल्हा बना लड़का 50 वर्ष पूर्व तथा दुल्हिन बनी लड़की 30 वर्ष पूर्व चल बसे जब दोनों किशोरावस्था में थे। विवाह का यह समारोह महीनेभर चला जो चीनी हंगरी घोस्ट के नाम से जाना जाता है।

(दैनिक नवज्योति, 27 अगस्त 2008)

(2) कुतिया से विवाह :

तमिलनाडु के शिवगंगा जिले के मनामदुरै में सेल्वाकुमार (33) ने तो दस वर्षीय सेल्वी नामक कुतिया से ही विवाह रचा लिया। यह विवाह एक कुत्ते और कुत्ती की हत्या से चढ़े पाप से मुक्त होने के लिए प्रायश्चित स्वरूप गणेश मन्दिर में किया गया। साड़ी में लिपटी दुल्हन को गाजेबाजे के साथ लाया गया।

जब सेल्वाकुमार 18 वर्ष का था तब उसने अपने कुत्ते-कुत्ती की हत्या करदी। बाद में उसे पक्षाघात ऐसा हुआ कि वह अपना बायां हाथ-पांव नहीं हिला सका। उसे बहरापन भी आगया। किसी ज्योतिषी ने सलाह दी कि कुतिया से विवाह करने पर वह अभिशाप मुक्त हो जायेगा अत: उसने यह विवाह रचाया।

(दैनिक भास्कर, 13 नवंबर 2007)

(3) गाजर का मटर से विवाह :

न्यूयार्क में शाकाहार को बढ़ावा देने और जानवरों पर हो रहे अत्याचार को रोकने के लिए मटर को वधू बनाकर दूल्हे गाजर से शानदार परेड के साथ विवाह रचाया गया। विवाह में शरीक लोगों ने शाकाहारी जीवन जीने का संकल्प लिया। अन्यों को भी प्रेरित किया।

(दैनिक नवज्योति, 20 मई 2008)

खवासजी के खटके

खवासजी का नाम गुलाबजी था। रहने वाले मारवाड़ के थे पर किसी जागीरदार से अनबन हो जाने पर ये मेवाड़ आकर छींपों का आकोला रहने लगे। इस समय मेवाड़ की स्थिति चारों ओर चोर, डाकू, लूटेरों की धमाल चौकड़ी लिए थी। गुलाबजी से यह देखा नहीं गया। उन्होंने अपनी सेना की टुकड़ी तैयार कर लूटेरों से लूटपाट शुरू कर दी। इससे इनकी वीरता का लोहा मांडलगढ़ के किलेदार अगरजी मेहता तक पहुंचा। अगरजी ने गुलाबजी को अपने यहां बुला लिया। गुलाबजी किले के नीचे तलहटी में रहने लगे।

चित्तौड़ में तब महाराणा अरिसिंह राजगद्दी संभाले थे। उनका व्यवहार ठीक नहीं होने से देवगढ़, गोगुंदा, देलवाड़ा, बेगू, कानोड़, भीण्डर के ठिकानेदार उनसे नाखुश थे। वे रतनसिंह को राजगद्दी का हकदार बनाना चाहते थे। पेशवा तथा जयपुर के सवाई पृथ्वीसिंह भी नाखुश थे जिससे अरिसिंह को चित्तौड़ खोना पड़ा।

ऐसी स्थिति में सलूंबर के रावत भीमसिंह आगे आये। उनका साथ मांडलगढ़ ने दिया तब युद्ध में वहां के अगरजी मेहता और खवासजी ने बड़ी बहादुरी दिखाई और विजयश्री हांसिल की। इस पर गुलाबजी को गुरजण्या का खेड़ा की जागीर दी और ताम्रपत्र दिया जिसमें लिखा-स्वस्तिश्री महाराजाधिराज महाराणा अरसीजी आदेसा तु नाई गुलाबा कस्य अपरंच थने गांव गुरजण्या खेड़ो चित्रकूट री फतै बाबत जो थें रावत भीमसिंह साथे कीदी थने अता कीदो जो थूं थारा बाल बच्चा जोगज्यो भोगज्यो अणी में चोलण वेगा नहीं इति संवत 1828।

गुलाबजी का पुत्र सवाईराम भी उन्हीं की तरह बहादुर था। एकबार वह शिकार खेलने शाहपुरा जा पहुंचा। वहां रात को दीवानजी का मेहमान हुआ। सुबह वहां के राजाजी से भेंट हुई। मेवाड़-शाहपुरा में आपसी तनातनी से राजाजी ने ताना देते कहा कि खवासजी हो तो हजामत तो बनानी आती ही होगी। यह सुन सवाईराम को जैसे तीर लगा। वह उसी अंदाज में बोला कि हजामत बनाना तो मेरा खानदानी धंधा है। उसे कैसे भूल सकता हूं किंतु मैं हजामत बनाने का राछ और उस्तरा मांडलगढ़ ही भूल आया हूं। वहां से लौटती वक्त आपकी हजामत बना दूंगा।

यह कह सवाईराम ने मांडलगढ़ आकर अपनी सेना तैयार की और वहां से प्रस्थान कर शाहपुरा के कई गांव लूटे। इससे शाहपुरा के राजा घबरा गये। तब वहां के दीवानजी ने सुलह कराई। सवाईराम ने दीवानजी को कहा कि राजाजी से कहिये कि मैं अभी तो राजाजी की हजामत के बाल भीगोकर जा रहा हूं। वहां से हजामत बनाने फिर लौटूंगा।

सवाईराम के बाद उसका पुत्र बलदेव हुआ। बलदेव का पुत्र लालजी हुआ। लालजी के कोई संतान नहीं होने से पुर निवासी कालूजी को गोद लिया। यह कालूजी बाद में चतरसिंह के नाम से जाना गया। चतरसिंह ने महाराणा सज्जनसिंह की नौकरी की।

मांडलगढ़ में खवासजी का दबदबा आज भी लोगों की जबान पर सुनने को मिलता है। गणगौर की सवारी इनकी हवेली से निकलती। होली में प्रथम अग्नि खवासजी की होती। पहला नूता खवासजी को लगता और विवाहोपरांत लाड़ा-लाड़ी पहला आशीष खवासजी से लेते। मांडलगढ़ में खवासजी की हवेली ही नहीं, खवासजी का मंदिर और खवासजी की बाड़ी भी तब बड़ी प्रसिद्धि लिए थी।

डॉ. तुक्तक भानावत

कोलगेट की आईएपीएचडी एवं कलिंगा के साथ साझेदारी

उदयपुर। ओरल केयर में मार्केट लीडर, कोलगेट पामोलिव (इंडिया) लि. ने इंडियन एसोसिएशन ऑफ पब्लिक हैल्थ डेंटिस्ट्री (आईएपीएचडी) एवं आदिवासियों के लिए दुनिया के पहले

विश्वविद्यालय -कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंसेस के साथ साझेदारी की है। इस साझेदारी का उद्देश्य भारत में ओरल केयर के महत्व पर प्रकाश डालना और एक ही स्थान पर एक साथ सबसे ज्यादा संख्या में लोगों द्वारा अपने दांतों को ब्रश करने का गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित करना है। नया गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड निर्मित करने के लिए किस में एकत्रित हुए 26,382 विद्यार्थियों, स्टाफ एवं आदिवासी बच्चों ने एक ही वक्त कोलगेट के स्ट्राँग टीथ टूथपेस्ट एवं कोलगेट टूथब्रश से अपने दांत ब्रश किए।

कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर राम राघावन ने कहा कि हम अपने 'कीप इंडिया स्माईलिंग' अभियान द्वारा देश में ओरल स्वास्थ्य बेहतर बनाने का सतत प्रयास करके अपने इस उद्देश्य को पूरा करते हैं। फ्लैगशिप 'ब्राईट स्माईल्स, ब्राईट फ्यूचर्स' जैसे कार्यक्रमों के साथ हम पिछले 40 सालों में 162 मिलियन से ज्यादा बच्चों को लाभान्वित कर चुके हैं, जो इसका बेहतरीन उदाहरण है।

जेके सीमेंट ने दी जेके वालपुट्टी को नई पहचान

उदयपुर। जेके सीमेंट ने अपने प्रतिष्ठित ब्रांड जेके वॉल पुट्टी के लिये एक ब्रांड रिफ्रेश की घोषणा की है। इसे बिल्कुल नये अवतार में रिलॉन्च किया गया है जिसका नाम - जेके सीमेंट वॉलमैक्स है। कंपनी ने रिलॉन्च की घोषणा करते हुये देश भर में नया टीवी कैम्पेन भी शुरू किया है। इसमें उनका बेहद मशहूर ऐम्बेसेडर छुटकऊ नजर आयेगा, जोकि ब्रांड के मुख्य प्रस्ताव दीवारें बोल उठेंगी को और भी मजबूत बनायेगा।

निरंजन मिश्रा- बिजनेस हेड (जेके व्हाइट सीमेंट) ने कहा कि हमने हमेशा ही हमारे ग्राहकों को सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता के उत्पादों एवं सेवाओं को उपलब्ध कराकर इसके स्तर को बढ़ाना चाहा है। जेके वॉलपुट्टी ने हाल ही में प्रतिष्ठित सुपरब्रांड दर्जा प्राप्त किया है और इसे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ब्रांड्स के एक एलिट लीग में शामिल किया गया है। विगत कई वर्षों में जेके वॉल पुट्टी के लिये बड़े पैमाने पर उपस्थिति दर्ज की गई है। एक सुदृढ़ ब्रांड नाम और एक व्यापक बिक्री एवं वितरण नेटवर्क के साथ ऑल न्यू अवतार जेके सीमेंट वॉलमैक्स का लक्ष्य ग्राहकों को सर्वश्रेष्ठ से भी बेहतर उपलब्ध कराना है। ब्रांड को रिलॉन्च किये जाने का उद्देश्य जेके व्हाइट सीमेंट पोर्टफोलियो में ब्रांड्स को उत्पादों की मैक्स फैमिली के अंतर्गत लाकर उनका विस्तार करना और उसे मजबूत बनाना भी है।

कॉंक्रीटो ग्रीन - न्युवोको का नया हाई परफॉर्मेंस सीमेंट लॉन्च

उदयपुर। न्युवोको विस्टास कॉर्प. लि. ने अपने सबसे नवीन और पर्यावरण के अनुकूल सीमेंट संस्करण में से एक, कॉंक्रीटो ग्रीन लॉंच किया। यह हाई परफॉर्मेंस सीमेंट अन्य सीमेंट प्रकार की तुलना में 25 प्रतिशत कम पानी का उपयोग करता है, जिससे उन क्षेत्रों में भी भवन निर्माण सामग्री उद्योग के लिए रास्ते खुले हैं जहाँ पानी की कमी है। कॉंक्रीटो ग्रीन को राजस्थान में लॉन्च किया गया और अब इस उत्पाद को देश के अन्य बाजारों में उतारा जाएगा।

सुश्री मधुमिता बासु, चीफ स्ट्रेटजी एण्ड मार्केटिंग ऑफिसर ने कहा कि कॉंक्रीटो ग्रीन के साथ, न्युवोको निर्माण उद्योग के लिए हरियाली और स्मार्ट समाधान प्रदान करने की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत कर रहा है। राजस्थान देश के सबसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में से एक है जहाँ पीने योग्य पानी की पहुँच भी काफी मुश्किल है।

ऐसे में एक ऐसा उत्पाद पेश करना, जिसके लिए न केवल कम पानी की आवश्यकता हो; बल्कि जो अंतिम संरचना की मजबूती भी बढ़ाता है, यह रेगिस्तान राज्य में कॉंक्रीटो ग्रीन लॉंच करने के लिए हमारी प्रेरणा बना। हमने इस संकल्पना पर उन उपभोक्ताओं के साथ बड़े पैमाने पर संशोधन किया है जो इस आवश्यकता को समझते हैं और स्मार्ट, सुरक्षित और स्थायी उत्पाद प्रदान करने में हमारे विश्वास की पुष्टि करते हैं।

आर्ची टाउनशिप-फेज 2 के नए प्लान एवं ब्रॉशर का विमोचन

उदयपुर। मुख्यमंत्री जन आवास योजना के तहत बनाई जा रही आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप के दूसरे चरण का काम देबारी पावरहाउस के सामने आरंभ हो गया हैं। योजना के ब्रॉशर का विमोचन और नए प्लान का श्रीगणेश पार्टनर ऋषभ भानावत, संजय बांठिया और सम्भव बांठिया ने किया।

उन्होंने कहा कि योजना के तहत आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप के फेज एक की अपार शानदार सफलता के बाद दूसरे चरण के फ्लैट की मुख्यमंत्री जन आवास योजना के तहत सौगात दी है। आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप में वन बीएचके और टू बीएचके फ्लैट्स के कुल 6 टावर्स बनाए जा रहे हैं। ब्रॉशर में योजना से जुड़ी संबंधित सभी सूचनाओं का जिक्र किया गया है। ईडब्ल्यूएस वर्ग - वन बीएचके की अनुमानित कीमत 10 लाख 71 हजार रुपए होगी। इसमें वन रूम, हॉल, सेमिमॉडुलर कीचन, 2 टॉयलेट - अटैच व कॉमन, बॉलकनी, कीचन होंगे। एलआईजी वर्ग - टू बीएचके की अनुमानित कीमत 15 लाख 91 हजार रुपए होगी। इसमें दो बेडरूम, एक अटैच टॉयलेट, हॉल, सेमिमॉडुलर कीचन, बड़ी बॉलकनी, एक कॉमन टॉयलेट की सुविधा मिलेगी।

हर घर में आरओ वाटर के साथ कीचन में ब्लेक ग्रेनाइट का प्लेटफॉर्म बनाया जायेगा। फ्लोरिंग में दो गुणा दो की डबल चार्ज विट्रीफाइड टाइल्स लगाई जाएंगी, विंडो और स्लाइडर्स एल्यूमिनियम के होंगे। इसी प्रकार आईएसआई मार्क ब्रांड की वायरिंग, मॉड्यूलर स्विच, टॉयलेट्स में सात फीट ऊंचाई तक ब्रांडेड टाइल्स, ब्रांडेड सीपी फिटिंग, ब्रांडेड सेनेटरी वेयर, दोनों तरफ लेमीनेट किए हुए फ्लश डोर, ब्रांडेड प्लंबिंग, ब्रांडेड लिफ्ट, इंटीरियर में शानदार फिनिशिंग, दीवारों पर घुटाई होगी। सभी टावरों में दो ब्रांडेड लिफ्ट व दो सीढ़ियां लगेंगी। इस योजना के अंतर्गत सेंट्रल गार्डन, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, फायर सेफटी/फायर फाइटिंग सिस्टम, वर्षा जल संग्रहण, हर घर में आरओ वाटर सप्लाई, एमेनिटीज में - जिम की सुविधा, बैंक्वेट हॉल, इंडोर गेम्स हैं, कमर्शियल एरिया में - शॉपिंग सुविधा, क्लिनिक, बैंक, एटीएम व पोस्टल सुविधाएं हैं, लिफ्ट व कॉमन एरिया में पावर बेकअप, प्लांटेशन व ग्रीनरी, रेजिडेंशियल एरिया में सेपरेट एंट्री व एक्जिट तथा सिक्योरिटी केबिन की सुविधाएं होंगी। इन आवासों में 2.67 लाख तक की ब्याज सब्सिडी, जीएसटी पर 4 प्रतिशत की छूट, रजिस्ट्री स्टाम्प शुल्क पर 3 से 4 प्रतिशत तक की छूट है।

जिंक इंडस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर। हिंदुस्तान जिंक को प्रतिष्ठित आईईआई, इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया इंडस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड 2019 से सम्मानित किया गया है। नई दिल्ली में आयोजित समारोह में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी एवं एमएसएमई के चेयरमैन तथा नेशनल बोर्ड

ऑफ एक्रिडिटेशन प्रो. डॉ. के. के. अग्रवाल ने यह अवार्ड जिंक के चीफ एचएसई ऑफिसर आर. एस. आहूजा एवं हेड एनवायरन्मेंट एण्ड सस्टेनेबिलिटी प्रदीप सिंह को प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि इंडस्ट्री लीडर्स को उनके इनोवेशन, मैन्युफैक्चरिंग, इंजीनियरिंग ऑपरेशंस और सर्विसेज में बिजनेस स्ट्रेटेजीज और प्रतिस्पर्धी तरीके से उत्कृष्टता बनाए रखने की उनकी क्षमता को मान्यता देने के लिए आईईआई इंडस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड्स की स्थापना की थी।

छात्रों ने बनाया ऑल-टेरेन व्हीकल (एटीवी)

उदयपुर। जी. डी. गोयनका इंटरनेशनल स्कूल उदयपुर के विद्यार्थियों ने अपने शानदार इंजीनियरिंग कौशल का कमाल दिखाते हुए मेधावी शिक्षकों के निर्देशन में ऑल टेरेन व्हीकल (एटीवी) बनाया है। जी. डी. गोयनका इंटरनेशनल स्कूल की प्रिंसिपल शालू बब्बर ने बताया कि व्हीकल के निर्माण की योजना को मूर्त रूप लेने में पांच महीने का वक्त लगा। इस वाहन के कई पार्ट्स विदेशों से मंगवाए गए। पूरा प्रोजेक्ट छात्रों ने खुद असेम्बल करते हुए अपनी इंजीनियरिंग का कमाल दिखाते हुए तैयार किया। इस प्रकार से हुनर दिखा कर बच्चे देश के विकास में योगदान तो दे ही सकते हैं, सफल विद्यार्थियों के रूप में अपनी मौलिक पहचान भी बना सकते हैं। इस प्रयास में सीनियर छात्रों के मार्गदर्शन में जूनियर छात्रों ने भी अपने अनुभवों को साझा किया और डिजाइन से लेकर व्हीकल तैयार करने तक में अपनी भूमिका बखूबी निभाई। छात्रों ने ही प्रबंधन को परियोजना का प्रस्ताव दिया और कुशल शिक्षकों के

मार्गदर्शन में उसे पूरा भी कर दिखाया।

शालू बब्बर ने इस परियोजना के लिए शिक्षकों, विशेष रूप से सुश्री प्रियंका (प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर), छात्रों तथा पूरी गोयनका टीम को बधाई दी और छात्रों को 21 वीं सदी के लिए सफल नागरिक बनने के लिए भविष्य में इस प्रकार के प्रयास करने के लिए इस तरह के मंच प्रदान करने का वादा किया। उन्होंने बताया कि ऑल टेरेन व्हीकल एक ऐसा चार पहिया वाहन है जो उबड़-खाबड़ जमीन पर भी आसानी से दौड़ सकता है। इसमें चार पहिये हैं इसलिए इसे क्वाड साइकिल भी कहते हैं। बाइक जैसी दिखने वाली इस क्वाड साइकिल को बनाने से पहले छात्रों ने इसका गहन अध्ययन किया। उसके बाद विदेशों से पार्ट्स मंगवाए गए। सबसे खास बात यह रही कि सभी पार्ट्स यूरोपियन काउंसिल के मानकों के अनुसार हैं। स्कूल में ही पार्ट्स की असेम्बलिंग की गई। इस मल्टीपरपज व्हीकल का उपयोग स्कूल के विशाल कैम्पस में मॉनिटरिंग, विजलेंस सहित अन्य कई कार्यों के लिए हो सकेगा। बच्चें भी साइट सीन कर सकेंगे। इसमें 250 सीसी का फोर स्ट्रोक इंजन है व 7.5 लीटर की टंकी है।

वृत्ति का उत्कृष्ट प्रदर्शन

उदयपुर। जालंधर में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय ओपन ओकिनावा गो-जू-रियू कराटे की 1 से 4 नंबबर तक हुई प्रतियोगिता में उदयपुर के लियो मार्शल आर्ट्स एकेडमी के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर 9 स्वर्ण, 9 रजत एवं 28 कांस्य पदक प्राप्त किये। इसमें वृत्ति पालीवाल ने एक रजत एवं एक कांस्य पदक हांसिल कर एकेडमी और परिवार का नाम रोशन किया।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ का इनोवेटिव टर्म प्रोडक्ट

उदयपुर। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने आईसीआईसीआई प्रू प्रीशियस लाइफ को लॉन्च किया है। यह उद्योग की पहली ऐसी टर्म योजना है, जिसे विशेष रूप से ऐसे ग्राहकों के लिए डिजाइन किया गया है, जिन्हें अपनी मौजूदा स्वास्थ्य स्थितियों और रोगों से प्रभावित होने के कारण लाइफ कवर हासिल करने में मुश्किल आती है।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर श्री पुनीत नंदा ने कहा कि 'आईसीआईसीआई प्रू प्रीशियस लाइफ' दरअसल एक ऐसा इनोवेटिव टर्म इंश्योरेंस प्लान है, जो सेहत संबंधी विभिन्न स्थितियों की बारीकियों को समझते हुए ग्राहकों को उपयुक्त लाइफ कवर प्रदान करता है। यह उत्पाद ग्राहकों को उनकी मौजूदा स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों के साथ एक ऐसी राह प्रदान करता है, जिसमें यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके परिवार के पास उनकी अनुपस्थिति में उनके जीवन को जारी रखने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन हों।

यह प्रोडक्ट पॉलिसी की अवधि के दौरान ग्राहकों को एक बार या नियमित रूप से प्रीमियम का भुगतान करने की सुविधा प्रदान करता है। ग्राहक यह भी चुन सकते हैं कि उनका परिवार दावा राशि कैसे प्राप्त करता है, यह एकमुश्त भी हो सकता है या नियमित मासिक आय अथवा दोनों का मिला-जुला रूप भी हो सकता है।

मीरां पर.......

(पृष्ठ तीन का शेष)

उल्लेखनीय है कि मीरांबाई वीरवर कल्लाजी राठौड़ की बुआ थी। इन यात्राओं में कल्लाजी की अनन्य भक्त डॉ. सुधा गुप्ता सदैव रहीं। एक दिन उन्होंने डॉ. भानावत को बापूजी सरजुदासजी के हाथ का लिखा एक रूक्का दिया जिसमें लिखा था-

''डॉ. महेन्द्र भानावत मेवाड़ के छोटे से गांव कानोड़ में पैदा हुए। उनका जीवन बाल्यकाल से ही विडम्बना के थपेड़ों से गुजरा। भानावत से मेरा सम्पर्क लगभग पन्द्रह वर्षों से चल रहा है। कई यात्राएं उनके सम्पर्क में हुई। मैंने इनके जीवन को बहुत बारीकी से देखा है। इनके जीवन में तामस कम, सरलता ज्यादा पाई। भानावत कलम के भी धनी हैं। उनका सारा जीवन लोकसम्पर्क में बीता। कई सालों से भारतीय लोककला मण्डल से जुड़े हुए हैं। छोटे से छोटे लोगों से मिलना, उनके जीवन पर प्रकाश डालना, उनके दुख सुख की जीवनी को अपनी कलम से ढालना उनकी विशेषता है।

दौलत और दंभ उनके जीवन से कोसों दूर है। कई कवियों की कविताएं, निबंध, कहानियां हमने पढ़ी हैं लेकिन भानावत की शैली हिन्दुस्तान के गरीबों के लिए एक मिशाल है। इन्होंने मेरे साथ निर्भय मीरां की खोज में अपना घर, अपनी स्थितियां सब एक तरफ रखकर नगर-नगर, पहाड़-पहाड़ की खाक छानी है और मीरां की वास्तविकता जन के सामने रखी है। मैं हृदय से भानावतजी को आशीर्वाद देता हूं कि उनका अंतिम जीवन इसी तरह लोगों की सेवाओं में बीते।''

कल्लाजी राठौड़ बड़े उद्भट वीर और अजेय योद्धा थे। उनके सम्बन्ध में भी इतिहास मौन बना हुआ है। पहलीबार डॉ. भानावत ने उन पर भी नई खोजपरक पुस्तक लिखी। इसका हाल ही में नया परिवर्धित संस्करण 'लोकदेवता वीर कल्लाजी राठौड़' नाम से राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर से प्रकाशित हुआ है।

बावजी चतरसिंहजी के साथ रहे उनके सेवक उदिया डांगी से भी उनकी मुलाकात हुई और बावजी से संबंधित अनेक वह जानकारी एकत्र की जो लोगों के लिए अनजान बनी हुई थी। बावजी ने उदिया की चाहना पर 'अलख पच्चीसी' की रचना की जिसके प्रत्येक छन्द में 'उदिया अलख पिछाण' लिखकर उदिया के नाम को अपने साथ अमिट कर दिया।

- डॉ. कहानी भानावत

फेडेक्स की एसएमई कनेक्ट में लघु मध्यम व्यवसायी की औद्योगिक चुनौतियों पर मंथन

उदयपुर। दुनिया की सबसे बड़ी एक्सप्रेस परिवहन कंपनी फेडेक्स ने छोटे से छोटे व्यापारियों को दुनिया के कोने तक अपने उत्पाद पहुंचाने में सुविधा प्रदान करने और उसमें आने वाली चुनौतियों पर मंथन हेतु उदयपुर के 100 से अधिक उद्योगपतियों के साथ विचार विमर्श किया।

फेडेक्स के उपाध्यक्ष ऑपरेशन्स मोहम्मद सईघ ने कहा कि फेडेक्स अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 220 से अधिक देशों और क्षेत्रों में अपनी सेवाए प्रदान करता है जिसमें दक्षता, सुरक्षा और विश्वसनियता सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता है। हमारे उत्तम अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क की वजह से उद्योगों को नयी उंचाइयों तक पहुंचने का माध्यम मिला है। विश्वस्तर पर फेडेक्स दुनिया की सबसे बड़ी एक्सप्रेस परिवहन कंपनी है। हम भारत में तीन दशकों से भी अधिक समय से परिचालन कर प्रमुख वाणिज्यिक क्षेत्रों को सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

फेडेक्स ने स्थानीय सेवा प्रदाता के साथ गठबंधन के माध्यम से 1984

में भारत में परिचालन शुरू किया था। 1997 में फेडेक्स भारत से सभी कार्गो उड़ान शुरू करने वाला पहला वाहक बन गया। आज फेडेक्स 6 हजार टीम मेम्बर्स और साप्ताहिक 23 उड़ानों के साथ भारत भर में 1000 से अधिक वाहनों के संचालन के जरिये अपनी सेवाएं प्रदान कर रही है।

फेडेक्स की मैनेजिंग डायरेक्टर, मार्केटिंग आरथी नागराजन ने कहा कि एसएमई कार्यक्रम पूरे देश में एसएमई हब में आयोजित किये जाते हैं। राजस्थान सरकार की रिपोर्ट के अनुसार उदयपुर में सेवा और मरम्मत क्षेत्र, कपड़ा, खनिज, रबड़ प्लास्टिक, पेट्रोल, रसायन, और कृषि आधारित उद्योगों में बहुसंख्यक योगदानकर्ताओं के साथ, प्रत्यक्ष तौर पर 65000 से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करने के लिए, 10000 से अधिक एमएसएमई कारोबार उदयपुर में पंजीकृत हैं। वर्षों से फेडेक्स दुनिया भर में एसएमई के साथ मिलकर काम कर रहा है क्योंकि हमारा मानना है कि एसएमई औद्योगिक क्षेत्रों और भौगोलिक सीमाओं के पार वैश्विक व्यापार का चेहरा बदल देगा।

गीतांजली में स्ट्रोक जागरूकता अभियान पर गहन मंथन

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल द्वारा स्ट्रोक अवेयरनेस एवं सरवाईवर मीट का आयोजन किया गया जिसमें अमेरिका के न्यूरो इन्टरवेंशनल डॉ. ब्लेसे बेक्सटर मुख्य अतिथि थे। इसमें गीतांजली के न्यूरोलोजिस्ट डॉ. रेनू खमेसरा, डॉ. अनीस जुक्कलवाला, डॉ. विनोद

मेहता, डॉ. सीताराम बारठ, डॉ. उदय भौमिक, डॉ. गोविन्द मंगल, सी.ई.ओ. प्रतीम तम्बोली तथा स्ट्रोक सरवाईवर्स और आमजन ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

डॉ. ब्लेसे ने कहा कि जितना जल्दी समय पर इलाज करा देते हैं उतना ही सफल इलाज हो सकता है। उन्होंने बताया कि 10 से 8 लोगों को खून की नस फटने वाला स्टोक होता है। डॉ. रेनू खमेसरा ने कहा कि ब्लड प्रेशर, शुगर, कोलेस्टोल, टीबी, एचआईवी, नस का बंद होना या नस का फट जाना, पुरानी चोट ये सभी लक्षण स्ट्रोक की तरफ ले जाते हैं। इसलिए अपना इलाज निरंतर कराते रहना चाहिये। डॉ. अनीस जुक्कलवाला ने बे फास्ट को समझाते हुए बताया कि बी से मतलब बैंलंस बिगड़ना, ई से मतलब आंखों से स्पष्ट ना दिखना, एफ से मतलब चेहरा का लटकना, ए से मतलब बाँह का लटकना, एस से मतलब बोलने में कठिनाई एवं टी से मतलब तुरन्त उसे स्ट्रोक रेडी हॉस्पिटल में लेजाकर इलाज कराने से है। डॉ. विनोद मेहता ने कहा कि गीतांजली में एक स्ट्रोक रेडी हॉस्पिटल भी है जहाँ आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हैं। डॉ. सीताराम बारठ ने बड़ी नस और छोटी नस में होने वाले ब्लॉकेज की जानकारी दी। मीट में डॉ. गोविन्द मंगल, डॉ. उदय भौमिक तथा प्रतीम तम्बोली ने भी विचार रखे।

बाल दिवस पर बाल-रंगों की प्रस्तुतियां

नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा परिसर स्थित नारायण नाम से लोकप्रिय हुए। इस दौरान बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता में वर्तमान विकास की आधार स्तंभ बनी हुई हैं।

चिल्ड्रन एकेडमी में बालदिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि पेसिफिक डेंटल कॉलेज एन्ड रिसर्च सेंटर की विभागाध्यक्ष सोनल कोठारी ने इंडियन डेंटल एसोसिएशन की ओर से बच्चों को टूथ पेस्ट, ब्रुश व साबुन का वितरण किया। संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने कहा कि बालक देश के भविष्य हैं, इसी धारणा को लेकर पं. नेहरू बच्चों से बेहद प्यार करते रहे और इसलिए वे बच्चों में चाचा नेहरू अपनी कल्पनाओं को नाना रंगों से साकार करने के साथ ही संस्थान के अपनाघर में रंगारंग प्रस्तुतियां दीं।

गांधी सेवा सदन, राजसमंद द्वारा आयोजित दस दिवसीय बालोत्सव पर मंत्री डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा कि चाचा नेहरू बच्चों में भारत का भविष्य देखते थे। उनका व्यक्तित्व सागर सी गहराइयां तथा हिमालय सी ऊंचाइयां लिये था। उन्होंने स्वतंत्र भारत के विकास की जो योजनाएं बनाईं वे ही

इस दौरान कक्षानुसार मेढ़क दौड़, पचास मीटर दौड़, 100 मीटर दौड़, कविता एवं राजसमंद क्विज प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। राजेश पाल ने पं. नेहरु की जापान यात्रा का दृष्टांत सुनाते हुए कहा कि जापान में हाथी नहीं होते हैं। वहाँ के बच्चों ने हाथी भेजने का अनुरोध किया तो नेहरूजी ने भारत से हाथी भेज कर बच्चों की इच्छा पूरी की। संजय पालीवाल ने नेहरू की गुट निरपेक्ष नीति की जानकारी दी।

आर्थिक स्लोडाउन के कारण और निवारण के उपाय

-डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत -

मोदी-2 सरकार के आर्थिक प्रबंधन पर चहुंओर सवालिया निशान उठ रहे हैं। जिन आर्थिक वादों के साथ सरकार का सृजन हुआ वे ही अब सरकार के गले का फांस बनते जा रहे हैं। सरकार के जिम्मेदार व्यक्तियों का मानना है कि अर्थव्यवस्था में तेजी-मंदी चलती रहती है। यह सामान्य प्रक्रिया का एक हिस्सा है। यह व्यवस्था अल्पकालीन होती है। अत: हमें घबराना नहीं चाहिये।

वर्तमान अर्थव्यवस्था भी इसी का हिस्सा है न कि हमारी गलत नीतियों का परिणाम। सरकार ने सिलसिलेवार गलत आर्थिक निर्णय लिए। ये हैं- (क) 8 नवम्बर 2016 को विमुद्रीकरण (ख) जुलाई 2018 को जल्दबाजी में बिना तैयारी के जीएसटी को लागू करना और (ग) पिछले सितम्बर माह में कॉर्पोरेट आयकरों की दरों में कमी करना।

सरकार ने आर्थिक स्लोडाउन से निपटने के लिये 29 सितम्बर 2019 को दो महत्वपूर्ण निर्णय लिये- (क) वर्तमान कम्पनियों की आयकर की दर 30 प्रतिशत से घटाकर 22 प्रतिशत करना (ख) 31 मार्च 2023 तक आने वाली कम्पनियों के लिए आयकर की दर 15 प्रतिशत रहना।

इस निर्णय के साथ भारतीय स्टॉक मार्केट में तेजी का महौल बना किन्तु आर्थिक बाजार में वस्तुओं की मांग में वह तेजी नजर नहीं आयी। सरकार ने इस कदम को जीएसटी के पश्चात महत्वपूर्ण कदम माना। यह सम्भावना भी व्यक्त की जा रही है कि इस निर्णय से वैश्विक स्तर पर भी भारतीय कम्पनियों को फायदा होगा। मेरे दृष्टिकोण से आयकर की दरों में कटौती से वर्तमान स्लोडाउन का कोई तत्कालिक समाधान नजर नहीं आता। इसके दो कारण हैं-

(क) सरकार यह दावा कर रही है कि आयकर दरों में कटौती से बाजार में निवेश का माहौल पैदा होगा। नये स्टार्टअप आयेंगे क्योंकि कम्पनियों के पास कम कर देने की वजह से अतिरिक्त लाभ विनियोग व्यवसाय में किया जायेगा किन्तु लाभ होने की सम्भावना तो होनी चाहिए। (ख) इस आर्थिक माहौल में नये स्टार्टअप से बाजार में तेजी आयेगी इसकी सम्भावना भी कम है। भारत में नये स्टार्टअप के सफल होने की प्रक्रिया भी काफी कम है।

वर्तमान में जो कम्पनियां व्यवसाय कर रही हैं वे भी लाभप्रद अवस्था में नहीं हैं। लगभग 11.89 लाख कंपनियां सक्रिय रूप से व्यवसाय कर रही हैं। उनमें से 8,41,942 कंपनियों ने कर निर्धारण वर्ष 2018-19 में आयकर का रिटर्न दाखिल किया। लगभग 30 प्रतिशत कंपनियां तो आयकर का रिटर्न ही नहीं भर रही हैं। इसमें से भी लगभग 56 प्रतिशत कंपनियों ने हानि का रिटर्न दाखिल किया अर्थात औसतन हर दो में से एक कंपनी को हानि हो रही है। जिन कम्पनियों को लाभ हो रहा है उनके विनियोग करने की दर भी काफी कम है।

यदि वर्तमान आर्थिक स्लोडाउन के कारणों की व्याख्या करें तो ब्रोकरेज गाल्डमैन सच की अनुसंधान रिपोर्ट बताती है कि भारत मे आर्थिक स्लोडाडन के तीन प्रमुख कारण हैं- (क) 40 प्रतिशत स्लोडाउन का कारण वैश्विक व्यापार युद्ध (ख) 30 प्रतिशत उपभोग में गिरावट की वजह से वस्तुओं के मांग में कमी (ग) फंडिग में कमी।

जनवरी 2019 से भारतीय बाजार में वस्तुओं के मांग में लगातार कमी आ रही है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था स्लोडाउन की ओर जा रही थी। मांग में निरन्तर गिरावट आती जायेगी तो कॉरपोरेट आयकर की दर में कटौती का कोई फायदा नहीं होगा। कॉर्पोरेट आयकर में कटौती से केंद्र सरकार से ज्यादा नुकसान राज्य सरकारों का होगा। केन्द्र सरकार को तो सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से वापस पैसा लाभांश के रूप में मिल जायेगा किन्तु राज्य सरकारों के पास इस हानि की पूर्ति करने का कोई स्त्रोत नहीं होगा। अनुमान के अनुसार राज्य सरकारों को लगभग 60,000 करोड़ रूपये का नुकसान होगा जिससे ज्यादा वित्तीय भार उठाना पड़ेगा।

होना यह चाहिये था कि कॉर्पोरेट आयकर की दर घटाने से पहले कर संरचना में दी गयी रियायतों एवं कटौतियों को हटानी चाहिये था। इसका प्रभाव यह होता कि सरकार को राजस्व की ज्यादा हानि नहीं होती। एक अनुमान के अनुसार सरकार के इस कदम से लगभग 1,12,000 करोड़ रूपए का नुकसान होगा। यह विडंबना ही है कि छोटे एवं मंझले व्यवसायी को अधिकतम 30 प्रतिशत की दर से कर चुकाना पड़ रहा है जबकि बड़ी कंपनियां केवल 22 प्रतिशत की दर से भुगतान कर रही हैं।

अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के लिए बाजार में वस्तुओं की मांग बढ़ानी होगी। मांग बढ़ने पर उत्पादक निवेश के लिए प्रेरित होंगे। निवेश बढ़ेगा तो रोजगार का सृजन होगा। वैसे भी कॉर्पोरेट क्षेत्र को आयकर अधिनियम में कई तरह की छूट उपलब्ध है जिससे सरकार को रेवेन्यू का नुकसान हो रहा है।

स्लोडाउन से निपटने के लिए मनरेगा जैसी योजनाओं का विस्तार करने से ग्रामीण क्षेत्र में फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स की मांग बढ़ेगी। आर्थिक निर्णय बहुत सोच समझ कर लेने होंगे। जनता आयकर विभाग, एनफॉर्समेंट डायरेक्टर विभाग, बैंकों आदि से डरी हुई है जिससे विनियोग का वातावरण नहीं बन पा रहा है। आज लोग खर्च करने के बजाय केश रखना पसंद कर रहे हैं।

नसों की गंभीर बीमारी का सफल उपचार

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक मरीज की नसों में हुई गंभीर बीमारी का सफल उपचार भामाशाह योजना के अन्तर्गत पूर्णतया नि:शुल्क किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों जमनीदेवी को चारों हाथों व पेट की कमजोरी एवं सांस की दिक्कत के चलते पीआईएमएस लाया गया। यहां चिकित्सकों ने उसकी गम्भीर स्थिति को देखते हुए इमरजेंसी में उसे वेन्टीलेटर पर लिया। इसके बाद न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. राजेश खोईवाल एवं उनकी टीम ने मरीज का परीक्षण किया जिसमें सामने आया कि मरीज को गिल्लन बर्रे सिंड्रोम (जी.बी.एस.) नामक बीमारी है। इस बीमारी के उपचार का खर्च अधिक होने से मरीज का सम्पूर्ण ईलाज भामाशाह योजना के अन्तर्गत नि:शुल्क किया गया। मरीज को कुछ समय तक आईसीयू में रखा गया जिससे उसकी हालत में सुधार होने लगा जिस पर उसे वार्ड में शिफ्ट किया गया। पूर्णतया स्वस्थ होने पर मरीज को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया।

सामान्य जन का चिकित्सा शास्त्र

- डॉ. मालती शर्मा-

विश्व में लोक परम्परा लोकजीवन के लिए संजीवनी शक्ति है। जीवन व्यवहार के चढ़ाव-उतार के रहते परम्पराएं अतीत और भविष्य से जोड़ती वर्तमान का दस्तक देती हैं। लोक परम्परा में मनुष्य की आयु 100 वर्ष है और उतना ही जीने का विधान भी है। उक्ति भी है-

'भोजन आधा पेट करि दुगना पानी पी, तिगुना श्रम चौगुनी हंसी वर्ष सवा सौ जी।' यह परम्परा निरोगी काया को सात सुखों में से पहला सुख मानती है- 'पहला सुख निरोगी काया।'

महाकवि तुलसीदास ने 'सकल शरीर बदि बहु भोगा' कहकर रोगिल शरीर के सुख लिए संसार के सारे सुख के साधन व्यर्थ बताये हैं।

मानव की मूलभूत प्रवृत्तियां भूख, प्यास, नींद और कामेच्छा की भी पूर्ति बिना विकृति आये आहार-विहार में कही गई हैं। अति से विकृति आती है। अति के दो प्रकार कहे गये हैं-मानती है, बाह्य पर्यावरण से आई अति और आन्तरिक पर्यावरण की अति।

'अति सर्वत्र वर्जयते।' जीवन में सब कहीं अति का निषेध कहा गया है। आहार-विहार में समाहार के टूटने से जीव-जन्तु, मानव शरीर में आई अतियां रोग हैं। इन्हें शरीर से बाहर निकालने, प्रभाव मिटाने की दवाइयां हैं। होम्योपैथी, यूनानी, आयुर्वेद, एलोपैथी, नैचुरोपैथी और भी बहुत सी पैथियां हैं।

पर पिछले 6-7 दशकों से एलोपैथी चिकित्सा पद्धति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। बीमारियों की रोकथाम के लिए टीकाकरण, जांच के लिए विविध उपकरण, इलाज के लिए नई औषधियों की खोज से कुछ असाध्य या लम्बे समय में ठीक होने वाले रोग खत्म हुए या शीघ्र ठीक हो रहे हैं। चेचक, मलेरिया, टाइफाइड, टीबी, कुकर खांसी ऐसी ही बीमारियां हैं। शल्यक्रिया सक बीमार जर्जर अंग लीवर, गुर्दे, घुटने, आंख, दांत का दूसरे के स्वस्थ अंगों या कृत्रिम अंगों से प्रत्यारोपण ने मनुष्य और जीव-जन्तुओं को नया स्वस्थ शरीर देने के उपाय खोज निकाले हैं पर एलोपैथी उपचार की विश्वभर में आज सबसे बड़ी समस्या है एक्शन का रिएशन-रिएशन की दवा का भी कभी-कभी रिएक्शन। एक दवा एक रोग में काम करती है दूसरा उभारती है।

लोक परम्परा में सदियों से ऐसी चिकित्सा पद्धति है, दिनचर्या विधान है जिसके पालन से आन्तरिक और बाह्य अतियां शरीर पर प्रभाव डाल विकृतियां बने ही नहीं आहार-विहार खान-पान के ऋतु मौसम दिन-रात के हर उम्र हर स्थिति बालक, वृद्ध, युवा, अधेड़, गर्भिणी, प्रसूता रोगी के लिए प्राकृतिक पर्यावरण के अनुसार मिले अन्न धान्य, फल, शाक भाजी, दलहन, तिलहन इनके गुणधर्म के अनुसार कैसे उपयोग करें कि आहार-विहार में समाहार सन्तुलन बना रहे। ये स्वास्थ्य और बलवर्धक हों, बीमारियां पास भी न फटके।

इस चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद और लोकजीवन के सदियों के अनुभव लोकोक्तियों, लोककथनों में लोकजीवन में से कुछ अभी भी हैं। जैसे-

'नित भोजन के अन्त में तोला भर गुड़ खाय
अन्न पचै और भूख लगे कब्जियत मिट जाय।'

या

भोजनांते पिबत तक्रम् दिनांते दुग्धभ पिबे।
खाय कै भूतै बाये सोवै
ता घर बैद कबहुं नहिं आवै

इस लोक पारम्परिक पद्धति में दस्त, उल्टी, बुखार, खांसी, सिर दर्द, चीर्टा, पेट दर्द, फोड़ा फुंसी, जलना, चोट लगना ऐसी छोटी-मोटी बीमारियों के इलाज हैं। इसे बुढ़िया पुराण महाराष्ट्र में आजीबाई चा बटवा, दायी मां की कोथली कहा जाता है।

पर यह कितने दुख की बात है कि लोकजीवन से यह लोकसर्वजनित चिकित्सा पद्धति लुप्त होती जा रही है। घर पर घरेलू इलाजों को भूल चले हैं। इसके साथ यह कितना सुखद उपक्रम है कि श्री प्रेमपाल शर्मा ने जो वर्षों तक विश्वप्रसिद्ध वनस्पतिविद् एवं वन्यजीव विज्ञानी डॉ. रमेश बेदी के शोध सहायक रहे हैं आयुर्वेद का गहन अध्ययन किये हैं। इस घरेलू लोकहित कार्यपद्धति को पुनर्जीवित करने का आज विश्व को पर्यावरण के साथ-साथ सामान्यजन में जो छोटी-छोटी बीमारियों के लिए डाक्टरों के पास दौड़ रहा है, रूचि जाग्रत करने की बहुत बड़ी जरूरत है।

इस विषय पर अभी तक उनकी सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें से घर का डाक्टर, स्वस्थ कैसे रहें, जीवनोपयोगी जड़ीबूटियां, स्वास्थ्य के रखवाले शाक सब्जी मसालें पुस्तक मेलों में हाथों-हाथ बिकी हैं।

'शुद्ध अन्न स्वस्थ तन' उनकी अभी आई पुस्तक है। ये पुस्तकें लोक के लिए अनमोल धरोहर हैं। लेखक ने प्रकाशक से सामान्यजन के लिए कम कीमत के साधारण संस्करण भी कराए हैं। मेरा यह सुझाव है, इनकी एक-एक प्रति हर घर में होनी चाहिये। वर्षगांठ पर उपहार में देनी चाहियें।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।